Bond Report

(Jan, 2016 — Dec, 2017)

File No. CCRT/JF-3/86/2015

(JF-20140088)

Field :

Visual Art

Subject :

Painting

Presented By :

MAHESH PAL

C/o Babulal Malviya, 215, Kilol Park, Dhobi Ghat,

Bhopal (M.P.) – 462002

☎ : +91-9926825588, ✉ : mahesh.pal88@gmail.com

अनुक्रमणिका

1 प्रारम्भिक दौर

2 कार्य का संक्षिप्त विवरण

3 बायोडाटा

4 रिपोर्ट – 1 मय चित्र

5 रिपोर्ट – 2 मय चित्र

6 रिपोर्ट – 3 मय चित्र

7 रिपोर्ट – 4 मय चित्र

8 प्रदर्शनी के छायाचित्र – "Two Steps"

9 प्रदर्शनी के छायाचित्र – "Pages of the Past"

10 Invitation Card

11 समाचार–पत्रों में प्रकाशित खबर की कटिंग

12 सारांश

प्रारम्भिक दौर

मैं अपने शुरूआती कला समय पर नज़र डालूँ, तो मालूम पड़ता है कि, मेरी एक कलाकार के रूप में दिलचस्पी सामाजिक चित्रण पर ही थी, नारी स्वरूप को समाज के स्वरूप में दिखाना ही मेरी महत्वता थी। सन् 2010 से पूर्व मेरा कला का माध्यम ऑयल रंगों का प्रयोग था। सम्पूर्ण चित्रण नारी संवेदनाओं के इर्द–गिर्द है। रेखाऐं, रंग एवं आकार मूल स्वरूप में दिखाई पढ़ती हैं। अक्सर कला महाविद्यालयों में शुरूआती दौर में एकेडमिक और रियलिज्म़ पर जोर दिया जाता है। शायद इसीलिए मेरी कला की पहली सीढ़ी यहीं से शुरू हुई। कॉलेज के छः वर्षों तक रियलिज़्म को ही महत्व दिया। 200 से अधिक नारी व नारी से जुड़े सामाजिक मुद्दों को ही केनवास का फलक बनाया। यही कारण है कि आज कलाकार के रूप में काम करते हुए मुझे कुछ साल हो गये, लेकिन सामाजिक विषयों से ही केनवास को सजाया जा रहा है। रंग और आगार पहले से काफी सशक्त हैं और मजबूती से खड़े हुए दिखाई देते हैं, जो एक कलाकार को कला यात्रा को आगे की ओर धकेलने की क्रिया में है। कुछ तस्वीरें मेरी प्रारम्भिक कला की दौर की प्रमाण हैं।

कार्य का संक्षिप्त विवरण

परत दर परत खुलती चली गयी, जब काम की गहराईयों में कदम रखा। मैं काम में और काम मुझ में डूबता ही चला गया। मानो अनन्त गहराईयों में कहीं दूर जाकर प्रकाश रूपी किरण दिखाई पढ़ रही है। सिलसिला जारी था और जारी ही रहा।

जैसा कि मैंने CCRT को अपनी प्रोजेक्ट रिपोर्ट में कहा है कि मानव अपने चारों ओर के जीवन से प्रभावित होकर ही सृजन करता है, अभिव्यक्ति करता है और सम्बन्ध रखता है। मेरी कला भी इस प्रभाव से मुक्त नहीं रही।

कलाकृतियाँ बनती रही, समाज की छटपहाहट दिखती रही। कैनवास कभी खुद ही आग–बबूला होता रहा। कभी गहरे चटक–भटक वाले रंगों ने डेरा डाला, तो कहीं शोक सन्नाटा रहा। जैसा कि समाज में आप देख ही रहे हैं। नई सामाजिक घटनाओं को बनाना ही मेरा शोक रहा है। इसलिए समाज में घुसकर सोचता हूँ और चित्रांकन करता है।

ऐसा करना मेरे लिए दुःखद अनुभव जैसा होता है कि देखता हूँ कैसे आंगन, दहलीज़ से लेकर सड़के तक लाशों से पटी है। कैसे अनेकों माँओं की गोदों में लाशों के ढेर हैं। बिलखती, चीखती, चिल्लाती हुई आज माँओं की आखों से आँसू सूखकर काले गहरे गढ्ढों तें तब्दील हो गये हैं।

बहुत मुश्किल होता है, माँ की ममता, वेदना और तड़प को कैनवास पर उकेरना, जिसको गैस काण्ड को साक्षी बनाकर आपको छायाचित्रों के माध्यम से पहुँचाया है।

समाज के बदलते स्वरूप को समझने और फिर आत्मसात करने के लिए समाज में रहना जिन्दापन का एक अहसास दिलाता है और कला कर्म करने का ऊर्जा स्त्रोत भी वही होता है।

दो वर्षों के दौरान समाज के अलग–अलग पहलुओं पर एकाग्रता करने की कोशिश रही, जिसमें कुछ हद तक कलाकार होना सुःखद अनुभव रहा। कभी–कभार कलाकार, समाज की गहराईयों को समझने के लिए समाज के बीचों–बीच खड़े होकर आत्मसात करना और कलाकार को रेखाओं, रंगों के माध्यम से कला की गहराईयों को छूने का मौका मिला।

भरतनाट्यम द्वारा प्रदत्त रसों को पढ़ा और जाना, तो पाया कि जीवन में उनका कितना बड़ा रोल है, जिससे प्रत्येक व्यक्ति को प्रतिदिन अदा करना होता है। नौ रसों की छटा कलाकृति के माध्यम से दर्पण रूपी चित्रण है, जिसमें श्रृंगार, हास्य, करूण, रौद्र, वीर, भयानक, वीभत्स, अद्‌भुत, शांत रसों का समावेश है। चटक रंगों के साथ पृष्ठभूमि को सपाट रखा गया है, जो कि रेखा, रंग, आकार को अपने से जोड़े हुए प्रतीत होती है।

'मिरर', 'आराम', 'राहगिरी डे', 'लेक सिटी ऑफ भोपाल', 'बचपन' आदि कई भाव समाज के सकारात्मक पक्ष को भी दर्शाते हैं। यह सब मेरी ही कल्पना का एक रूप है, जिसमें मैंने समाज के सुखद पलों को कैनवास पर रखने का प्रयास किया है, जो कलाकार की दृष्टि से पूर्ण साबित है। भावनात्मक पक्ष के साथ रंगों का संयोजन व्यवस्थित करने का प्रयास मात्र है। विषयों में समाज की खुशी का अहसार हो, जो कि मुझे एक कलाकार होने के नाते अपनी खोज की दिशा में ले जाता हुआ प्रतीत होता है। कलाकृतियों को बनाते वक्त स्मरण था कि मैं और मेरी कला की खोज का प्रतिबिंब है, जो एक सरल, सहज मन की उत्पत्ति का स्वरूप है।

'गणेश' – सामाजिक प्राणी हूँ, तभी तो समाज को देखकर समझना और फिर आत्मसात कर केनवास तक लाना मेरे लिए मेरी कला यात्रा का हिस्सा है, जिसे मैं ताउम्र जीना चाहूँगा। समाज और धर्म एक दूसरे के पूरक हैं, तो मुझ सामाजिक कलाकार से कैसे छूट सकते हैं। गणेश, मेरी कला श्रृंखला की एक कड़ी है, जिसको मैंने कैनवास पर उकेरकर समाज और धर्म को जोड़ने में संबंध रहा।

'बचपन' – कलाकार की खोज यहीं आकर नहीं रूकी है, वह अपने बचपन को टटोलने, उसके मर्म स्पर्श को महसूस करने, जो बचपन जी चुका था, उसको अपने कैनवास का हिस्सा बनाया और कल्पना करता है कि अर्जुन, जो महाभारत का मुख्य पात्र था, जिसका वर्णन एक शूरवीर योद्धा के रूप में बताया गया है, जो कि बहुत ही चर्चित है। अपनी कल्पना में उसको सबसे आगे रखकर एवं भावरूपी भाग–भंगिमाऐं का चित्रण है, जिसको मैंने वर्तमान समाज से जोड़कर अपने संघर्ष से जूझता हुआ, आगे बढ़ता हुआ अपने मुकाम के करीब पाता है। कलाकार की दृष्टि से मेरा सफल प्रयास रहा, जो सपाट पृष्ठभूमि, आकारों को गढ़ा है एवं पहली, दूसरी व तीसरी लेयर के माध्यम से काम की गहराई और संयोजन उत्कृष्ठता को दर्शाने का प्रयास सफल रहा, जो मेरी एक खोज का हिस्सा थी।

खोज की निरंतरता चलती रही, काम (कलाकृति) दिन–प्रतिदिन बनती गयी और जा पहुँचा अपनी धरती माँ के समीप और बड़–बड़ाने लगा, कभी हँसा, तो कभी मायूस होकर बैठ गया। सिलसिला जो कई दिनों तक चला, फिर एक दिन कला कक्ष में धरती माँ यानि 'माय प्लानेट' नामक कृति की रचना की, जिसमें तीन प्लानेट को पकड़े हुए मैं खुद को केनवास पर लाया, जिसमें पहला प्लानेट सफेद और खाली है, जो मानव जीवन की उत्त्पत्ति के समय को दर्शाता है। दूसरा प्लानेट जिसमें जीवन है, बहुत ही खूबसूरत ढंग से अपने आप में समेटे हुए है। तीसरा जो कि भविष्य की घटनाओं की ओर इशारा करते हुए प्रतीत होता है। साथ ही संकेत भी करता है कि प्रकृति से छेड़खानी, जो कि आज के मानव की रोजमर्रा की कहानी है, करना छोड़ दे, नहीं तो दुष्प्रभाव रूपी कार्य उसे खत्म कर देगा, उसका नाश कर देगा। नीला रंग कलाकृति का श्रृंगार है, जो टेक्सचर के साथ आकृति को सुझाता हुआ एक साफ–सुथरा संदेश है, जिसे हम सबको सुनना समझना और उस पर काम करना अनिवार्य है। थर्ड बेकग्राउण्ड में तीर रूपी आकार है, जिसमें पेड़ लगाओ पृथ्वी बचाओ नामक संदेश छिपा है, जो आज की युवा पीढ़ी के लिए मार्गदर्शन साबित हो सकता है। कलाकार अपनी कृति को खोज की नई सीढ़ी मानता है।

समाज, जो विस्तृत है, विशाल है और अद्‌भुत है। एक तरफ समाज एक–दूसरे का सहारा बना हुआ है, तो दूसरी तरह उसको नीचा दिखाने और उसका शोषण करने में भी पीछे नहीं है। कहने में बड़ा अजीब है कि कैसे समाज का निर्माण हुआ? धर्म को भी स्थान दिया, जिसमें अनेकों जाति–धर्म एक साथ प्रगति की राह पर है, अपनी खोज को नये दृष्टिकोण से सोचने और अपनी बात को कहने के लिए...

'टू स्टेप्स' – कला प्रदर्शनी, स्वराज आर्ट दीर्घा, भोपाल में रखी और समाज को अवलोकनार्थ बनाया, तब जाना कि किस तरह से कला प्रदर्शनी गैलेरी में एक अलग ही माहौल रहा, पहली बार मैंने अपने कला को समाज में सम्मिलित किया। मैं यह भी कह सकता हूँ कि समाज के सामने उसी की तस्वीर रखी गई हो, जिसका वास्तविक स्वरूप समाज खुद ही देख रहा हो और आश्चर्यचकित हो रहा हो, और एक–दूसरे से बात करते नज़र आ रहा हो, कि कैसे हमारा समाज हमारी आँखों के सामने ही गंदा और भद्‌दा होता चला जा रहा है। मीडिया को भी साक्षी बनाया, तो उन्होंने अपनी भाषा का उपयोग कर 'समाज की परिस्थितियों को उकेरता कलाकार', 'अपना गुस्सा मेरी पेंटिंग पर निकाल लो', 'कैनवास में छुपा दर्ज' आदि शीर्षकों से समाचार–पत्र में प्रकाशित कर बताया कि किस तरह एक कलाकर सामाजिक रूपी कार्यों में मग्न है और समाज का असली चेहरा दिखा रहा है।

कला रशिकों, कला गुरूओं और कला मित्रों से बातचीत का अवसर मिला, जिन्होंने वास्तविक कला खोज, जो समाज के लिए सीख साबित होगी, सराहनीय बताया एवं रेखा, रंग व आकार के साथ एक उच्च कोटि की कला का चित्रण है। आशीर्वाद एवं शुभकामनाऐं भविष्य के लिए।

'Pages of the Past' – 5 दिसम्बर, 2017 वह दिन था, जब मैं अपनी तीसरे एकल कला प्रदर्शनी आयोजित की। कला में समाज की रूह तक का चित्रण है, जिसमें चीखते, बिलखते लाशों के ढेरों का रूपांकन है। जैसा कि मैंने पूर्व में उल्लेख किया है कि, मेरी खोज यानि कि कला यात्रा, मेरी कला यात्रा की सबसे गहन खोज होगी, जिसमें कला की गहराईयों के साथ सामाजिक विषयों का मार्मिक चित्रण है।

Shri Shantinath Ji Sarang, Founder of SAMBHAWNA TRUST से मेरी बातचीत – मैं पहली बार अपने दोस्त के साथ सर से मिला, तो उन्होंने बताया कि वे किस तरह दर्दों को मरहम लगा रहे हैं। 1984 से आज तक कितनी माताओ–बहनों को सांतवना एवं तसल्ली भरी संवेदनाओं को बांटा। दर्द क्या होता है, हमने देखा है, जहाँ तक नज़र जा रही थी, बस लाशें ही लाशें थी। चीखों की आवाज़ आज तक सुनवाई देती है कि ''भागो–भागो गैस निकल रही है।'' आज भी गली मोहल्लो में बच्चे भागते हुए चिल्लाते हुए देखाई देते हैं। उन्होंने तो यहाँ तक बताया कि यह घटना (भोपाल गैस त्रासदी) हिरोशिमा औरा नागाशाह की घटना के बाद दुनिया की दूसरी बड़ी दुर्घटना थी और साथ ही कहा कि यूनियन कार्बाइट गैस का प्रभाव आज भी लोगों में देखा जा सकता है। आज भी लोग जहरीला पानी पी रहे हैं और लोग आज रोटियाँ कम दवाईयाँ ज्यादा खाते हैं। राजनीतिक पार्टियाँ अपनी–अपनी रोटियाँ सेक रही है। राजनेता आते हैं हजार वादें करते हैं और चले जाते हैं। जिसे सुनकर मुझे बहुत दुख हुआ, फिर मैंने तय किया मैं भोपाल गैस त्रासदी को अपने कैनवास का हिस्सा बनाऊँगा। 3 दिसम्बर, 1984 का मंजर 200 ड्रांइग्स, 25 कैनवास और 20 से ज्यादा पेपर वर्क पर चित्रण किया, जिसके छायाचित्र मैं प्रस्तुत कर रहा हूँ।

CCRT के प्रोजेक्ट के अनुसार घटना वास्तविक रूपी तो है हीं, साथ ही साथ भविष्य में ऐसी घटना दुबारा न हो, इसको भी मैंने ध्यान में रखकर कलाकृतियाँ तैयार की हैं।

प्रोजेक्ट के अनुसार, मैंने 3 स्कल्पचर, 1 इंस्टोलेशन को भी कलादीर्घा में रखा। गैस त्रासदी की तबाही का मंजर था और दूसरी तरफ कैनवास को गाय के गोबर से लीप कर और कण्डे चिपकाकर व उसमें एक होलनुमा कर पेपर के फूलों का चित्रण है, जो आज की युवा पीढ़ी को संदेश देने की मुद्रा में हैं कि अपना नज़रिया उनके प्रति नर्म और मर्म स्पर्श ही रखें, जो उस घटना के शिकार हुए। आज का शिथिल समाज उनको अपने कंधो से कंधा मिलाकर साथ चले, जिन्होंने अपनों को गैस त्रासदी में खोया है। श्रृद्धांजलि अर्पित...

बायो-डाटा

MAHESH PAL 'GOBRA'

C/o Babulal Malviya
215, Kilol Park, Dhobi Ghat,
Bhopal – 462002 (M.P.)

✉ **- mahesh.pal88@gmail.com**

☎ **- +91-9926825588**

Date of Birth - 10th July 1984.

Qualification:

- 2006 **I.G.D.** Govt. of Maharashtra.
- 2008 **B.F.A.** from Govt. Institute of Fine Arts Gwalior, M.P. (Khairagardh University)
- 2010 **M.F.A.** from Govt. Institute of Fine Arts Gwalior, M.P. (**RMST** University)

Award:

- 2017 **Karnataka Lalit Kala Academy Award**, Karnataka.
- 2017 **Prafulla Dhunkar National Award**, Mumbai.
- 2016 **Tio, Camlin & Art Society of India Award**, Mumbai.
- 2013 **Visition of Madhya Pradesh Award** by Swaraj Sansthan, Sanchanalya, Bhopal.
- 2012 **Lokmanya Tilak "Best Award"**, Pune**.**
- 2011 **Dada Kande Award**, Gwalior (M.P.)
- 2011 **ARANYA** National Art Exhibition, Kolkata**.**
- 2011 **Special A.I.F.C.S. Award**, New Delhi.
- 2010 **M.P**. State Award, Gwalior.
- 2010 **All India Art Mall Award**, New Delhi.
- 2007 **"First Award" Late L.S. Rajput Memorial Painting Award**, (Govt. Institute of Fine Arts, Gwalior)
- 2007 **Gold Medal** of Youth Hostel Association of India

Scholar Ship:

- 2015 **Junior Fellowship Ministry of Culture**, New Delhi.
- 2010 **Young Artist Scholarship, Ministry of Culture**, New Delhi.

Participation:

- 2016 **National Art Exhibition,** Lucknow
- 2013 **NCZCC,** Nagpur
- 2012 **Bombay Art Society**, Mumbai.
- 2011 **NCZCC**, Nagpur.
- 2011 **77th All India Exhibition of Art** Amritsar.

- 2010 **Dhoomimal Arts Gallery**, New Delhi.
- 2010 **All India A.I.F.C.S.**, New Delhi.
- 2009 **M.P. State Exhibition**, Gwalior.
- 2009 **Raza Exhibition**, Gwalior.
- 2008 **74th All India Exhibition of Art**, Amritsar.
- 2006 **M.P. State Exhibition**, Ujjain.
- 2005 **M.P. Sahitya Academy**, Bhopal.

Camp:

- 2017 **National Uttrayan Art Camp**, Baroda.
- 2017 **National Lalit Kala Academy Art Camp**, Bangalore.
- 2013 **National Art Camp**, Rishikesh.
- 2012 **Ported National Art Camp**, Swaraj Bhavan, Bhopal.
- 2012 **National Art Camp,** Shri Nagar.
- 2012 **Ported National Art Camp**, Swraj Bhavan Bhopal.
- 2011 **Junior Artist Camp**, AIFACS, New Delhi.
- 2006 **Fusion National Art Camp**, Indore.
- 2005 **Kala Rang Kala Sang National Camp,** Gwalior.

Solo Show:

- 2017 **Pages of the Past,** Bharat Bhavan, Bhopal.
- 2015 **Two Steps,** Swraj Bhavan, Bhopal.
- 2008 **Tansen Kala Vithika**, Gwalior.

Group Show:

- 2016 **Tel us Art International Group Show,** Bharat Bhawan, Bhopal.
- 2014 **Nive Art Center,** New Delhi.
- 2013 **Seven Art So**, L.K.A. New Delhi.
- 2012 **College of Art**, Shri Nagar.
- 2012 **Paint Four Justices**
- 2012 **Now Contemporary Art**, Ujieongbu Art Complex, Ujieoungbu, South Korea.
- 2012 **Art Martin Khajoraho Festival**, Khjuraho.
- 2012 **Four Dimension in Series of Roobhabha**, Bharat Bhavan, Bhopal.
- 2011 **ASYAAF Art Festival**, South Korea.
- 2009 **Ruphav**, Bharat Bhawan, Bhopal.
- 2008 **Visual Art Exhibition**, Indore.
- 2007 **Tatv Art Gallery,** Indore.
- 2006 **Sangam Kala Vithika**, Gwalior.
- 2005 **Fusion Lokayta**, New Delhi.
- 2005 **Fusion Kala Vuthika,** Gwalior.

Permanent Address:

S/o Shri Lakhan Singh
Village-Gobra, Post-Chhimak, Distt.-Gwalior (M.P.) – 475110

रिपोर्ट - 'प्रथम'

श्रीमान्, मेरा काम यहाँ सुचारू रूप से चल रहा है, जिसकी सारी रूपरेखा मैं आपके बताए गये गाइड लाईन के अनुसार भेज रहा हूँ, जो इस प्रकार है :–

मेरे चित्रों में समाज की छट–पटाहट, गुण, दोष और वो सारे तत्व, जो कि समाज में विद्यमान है, उजागर करने का पूर्ण प्रयास है। कहीं तो रंगों की चटक से मेरा कैनवास उल्लाहास में, तो कहीं सादगी से सर झुगाए हुए है। कहीं रसों का भण्डार है तो कहीं मेरी आद्यात्म संस्कृति की छाप है और तो और मेरे गाँव का वो कोना भी अभी छूटा नहीं हैं, जिसमें मैं अपने अनमोल चासनी की तरह मीठे सपने सजाए और जिये, जिनका प्रभाव, रंग, चमक, हाव–भाव मेरी आँखों में आज भी बरकरार है।

शायद यही कारण है कि मैं समाज के भीतर घुसकर सोचता हूँ, जिसका साक्षात्कार आप मेरी कलाकृतियों में स्पष्ट रूप से देख सकते हैं।

(1) **WE ARE INDIAN –** एक्रेलिक ऑन कैनवॉस, जिसमें समाज का मुखौटा है, जिसमें समाज Fair Lovely टाइप की चादर ओढ़े हुए है, जिसके पीछे की कहानी किसी को दिखाई नहीं देती, पर आप इस कलाकृति में स्पष्ट रूप से देख सकते है कि कैसे मेरे समाज का चेहरा बदल रहा है। वह किस हद तक उतर आया है। कहना उचित नहीं होगा, आप खुद ही समझ लीजिए।

(2) **NATRAJ –** एक्रेलिक ऑन कैनवॉस, मेरी प्रकृति का रंग मेरे आँगने को पीपल के पेड़ के रंग से भरा है, जो मेरी आँखे बन्द करने के बाद भी स्पष्ट है, जिसकी सुगन्ध 500 किमी. दूर भी मेरे ज़हन में रस घोलती है, आनन्दित करती है। इसमें मैंने वो हर रंग चढ़ाया है, जो बचपन में जीया, आप अशोक चक्र को ही ले लीजिए 5 पैसे से लेकर आज तक देख रहा हूँ। मुख्य चित्र में समाज के अंग–प्रतंग, हाव–भाव रूपी संकेत है।

(3) **SHIVA –** नाम व रूप से कोई भी अपरिचित नहीं है। ब्रह्मा, विष्णु की ही तरह इनकी भी प्रकृति की संरचना में अहम् भूमिका है। सपाट भूमि, लाल ऐसी शुद्र रस की छटा है, जिसको देखते ही शेरों की तरह (Rour Sound) दहाड़ कानों में गूँजने लगती है। अपनी तीसरी आँख खोलकर समाज की बुराई, दोष को वह Negatively कर रख देती हैं। कहना मुश्किल है और उससे भी मुश्किल है कर के दिखाना कि समुद्र मंथन के समय, अमृत दूसरों को और जहर अपने खाते में लिया महान्, महान् हैं शिवा।

(4) **DIFFERENT TYPES OF SHADES –** कहना चाहूँगा कि मेरे गाँव की दीवार पर बने नाना प्रकार के देवी–देवता, जिनका अराध्य मानकर सुबह होती है, जिन्दगी के छोटे से छोटे, बड़े से बड़े फैसले इन्हीं के समक्ष होता है। वैसे तो जो एक माटी और कच्चे रंगों से बने निर्जीव हैं, लेकिन हम इनको जीवों से भी ज्यादा मानते हैं। हमारी श्रद्धा, विश्वास, जीवन के अहम् मुद्दे इन्हीं पर आश्रित है। बाहर कलर के साथ उन तमाम रंगों और आकृतियों को बाहर लाने का प्रयास है, जिसे आपके समक्ष रख रहा हूँ।

(5) **LACK CITY OF BHOPAL –** बहुत ही मशहूर है भोपाल के तालाब। शाम होते ही भारत भवन की मुण्डेलों पर बैठ कर घंटो निहारते रहते हैं। इस तालाब को उस पास बनी घर इमारतें हैं, जो इस तरफ से धुन्धली–सी जान पढ़ती हैं। रोड के किनारे लगी स्ट्रीट लाईट पानी पर पढ़ने के कारण उसमें Reflection पैदा करती हुई मिस्ट्री का आभास करती है। देखने पर अद्भुत, आनन्दित करती हैं। राजा भोज की प्रतिमा के साथ वन विहार की झलक को सम्मिलित कर शांत व स्वच्छ अपने रंग और आकृति में डालने की कोशिश।

(6) **NAVRAS –** ज़िन्दगी की प्रक्रिया अजीब है, कोई समझता है और कोई नहीं। मैं अगर भरतमुनि को नहीं पढ़ता तो शायद मैं भी नहीं जान पाता। श्रृंगार, हास, करूण, शांत, वीर, विभत्स, रोद्र आदि रसों के समावेश हमारे जीवन में अहम् भूमिका निभाते हैं या कह सकते हैं सुबह से शाम तक हम

इन्हीं रसों में रहते हैं। महान् हैं वो जिन्होंने ऐसी खोज कर हमें अवगत् कराया, इन्हीं सभी रूपों का साक्षात्कार मैं आपको अपनी कलाकृति नवरस के माध्यम से कराना चाहता हूँ, जो कि आपके समक्ष हैं।

श्रीमान्, काम तो मैं पिछले कई वर्षों से कर रहा हूँ, लेकिन यहाँ मैं आपके द्वारा दी गई समयावधि के Thought, Colour और Subject रूपी अनुभव आपके साथ Share कर रहा हूँ।

श्रीमान्, कलाकृतियों और समाज के बीच की वार्तालाप मैं आपसे करता रहूँगा और आपके द्वारा दी जाने वाली राशि का शत् प्रतिशत् उपयोग मैं कलाक्रम में करूँगा। आगे के Thoughts पर काम करने का प्रयास कर रहा हूँ। आशा करता हूँ, समय पर राशि मिलते ही काम को साक्षात्कार रूप दूँगा।

“LAKE CITY OF BHOPAL” – Acrylic on Canvas

“WE ARE INDIAN” – Acrylic on Canvas

“DIFFERENT TYPES OF SHADES” – Acrylic on Paper

“NAVRAS” – Acrylic on Paper

“NATRAJ” – Acrylic on Paper

“SHIVA” – Acrylic on Paper

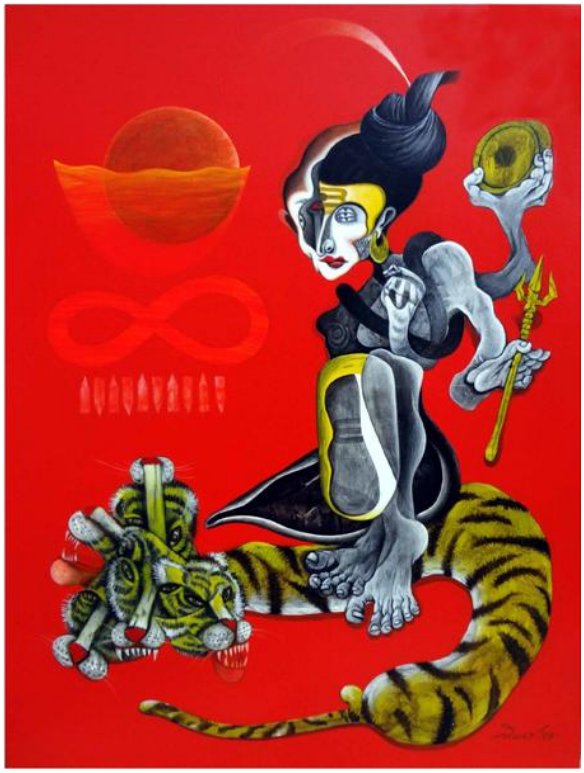

रिपोर्ट - 'द्वितीय'

श्रीमान्, मेरा काम यहाँ सुचारू रूप से चल रहा है, जिसकी सारी रूपरेखा मैं आपके बताए गये गाइड लाईन के अनुसार दूसरी बार भेज रहा हूँ, जो इस प्रकार हैः–

मेरे चित्रों में समाज की छट–पटाहट, गुण, दोष और वो सारे तत्व, जो कि समाज में विद्यमान है, उजागर करने का पूर्ण प्रयास है। कहीं तो रंगों की चटक से मेरा कैनवास उल्लाहास में, तो कहीं सादगी से सर झुगाए हुए है। कहीं रसों का भण्डार है तो कहीं मेरी आद्यात्म संस्कृति की छाप है और तो और मेरे गाँव का वो कोना भी अभी छूटा नहीं हैं, जिसमें मैं अपने अनमोल चासनी की तरह मीठे सपने सजाए और जिये, जिनका प्रभाव, रंग, चमक, हाव–भाव मेरी आँखों में आज भी बरकरार है।

शायद यही कारण है कि मैं समाज के भीतर घुसकर सोचता हूँ, जिसका साक्षात्कार आप मेरी कलाकृतियों में स्पष्ट रूप से देख सकते हैं।

(1) **GANESHA**
(2) **TANDAV**
(3) **ABHIMANYU**
(4) **BACHPAN**
(5) **MY PLANET**
(6) **SAVE GIRL CHILD**

श्रीमान्, काम तो मैं पिछले कई वर्षों से कर रहा हूँ, लेकिन यहाँ मैं आपके द्वारा दी गई समयावधि के Thought, Colour और Subject रूपी अनुभव आपके साथ Share कर रहा हूँ।

श्रीमान्, कलाकृतियों और समाज के बीच की वार्तालाप मैं आपसे करता रहूँगा और आपके द्वारा दी जाने वाली राशि का शत् प्रतिशत् उपयोग मैं कलाक्रम में करूँगा। आगे के Thoughts पर काम करने का प्रयास कर रहा हूँ। आशा करता हूँ, समय पर राशि मिलते ही काम को साक्षात्कार रूप दूँगा।

“GANESH” – Acrylic on Canvas

“TANDAV” – Acrylic on Canvas

“ABHIMANYU” – Acrylic on Canvas

“MY PLANET” – Acrylic on Canvas

“ARJUN” – Acrylic on PAPER

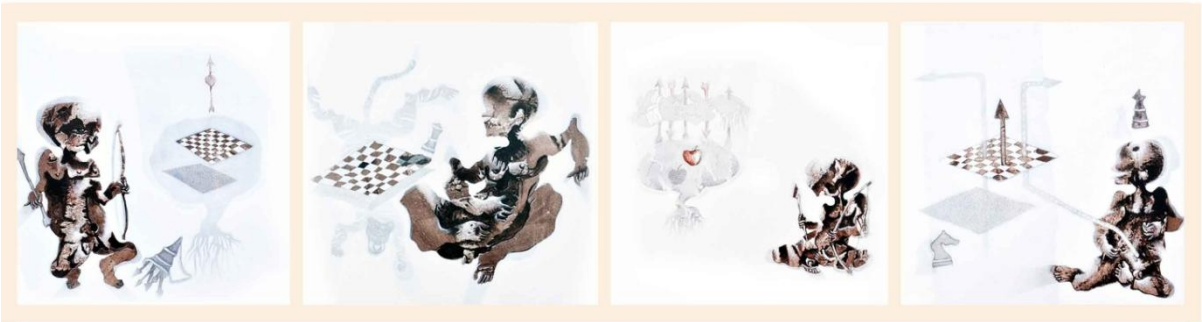

“SAVE GIRL CHILD” – Acrylic on Canvas

रिपोर्ट - 'तृतीय'

श्रीमान्, मैं अपनी सारी रूपरेखा आपके बताए गये गाइड लाईन के अनुसार तीसरी बार भेज रहा हूँ, जो इस प्रकार है :–

मैं आपका शुक्रिया अदा करना चाहूँगा कि आपके द्वारा दोनों Installments मुझे सही समय पर प्राप्त हो गई हैं, जिसका सद्उपयोग मैं अपने कार्य के लिए कर रहा हूँ और यह आशा करता हूँ कि आगे का कार्य भी इसी प्रकार जारी रहेगा। आपकी द्वारा दी गई समय–सीमा अनुसार मेरा कार्य निरंतर जारी है, जिसके चलते मैंने इस बार एक नेशनल अवार्ड (First Karnataka Lalit Kala Award 2017) प्राप्त किया एवं National Exhibition of Art, New Delhi में प्रतिभागी रहा व वर्कशॉप लगाई। साथ ही उत्तरायन आर्ट केम्प, वडोदरा में भी भागीदारी रही, जो मेरे काम से साथ एक नई उपलब्धी है। यह सब आपके सहयोग से ही संभव हुआ है।

(1) **RESTING**
(2) **MIRROR**
(3) **SHAKTI**
(4) **WE ARE INDIAN**
(5) **RAGIRI DAY OF BHOPAL**
(6) **GAS TRAGEDY OF BHOPAL**

श्रीमान्, मैंने आपको अवगत् कराया कि आपके सहयोग से ही मैं एक नेशनल अवार्ड प्राप्त कर पाया और 2 नेशनल वर्कशॉप में प्रतिभागी रहा।

श्रीमान्, आपके द्वारा दी जाने वाली राशि का शत्–प्रतिशत् उपयोग मैं कलाक्रम हेतु ही कर रहा हूँ। आगे के Thoughts पर काम करने का प्रयास जारी है। आशा करता हूँ, समय पर राशि मिलने पर काम को एक साक्षात्कार रूप दूँगा।

“SHAKTI” – Acrylic on Canvas

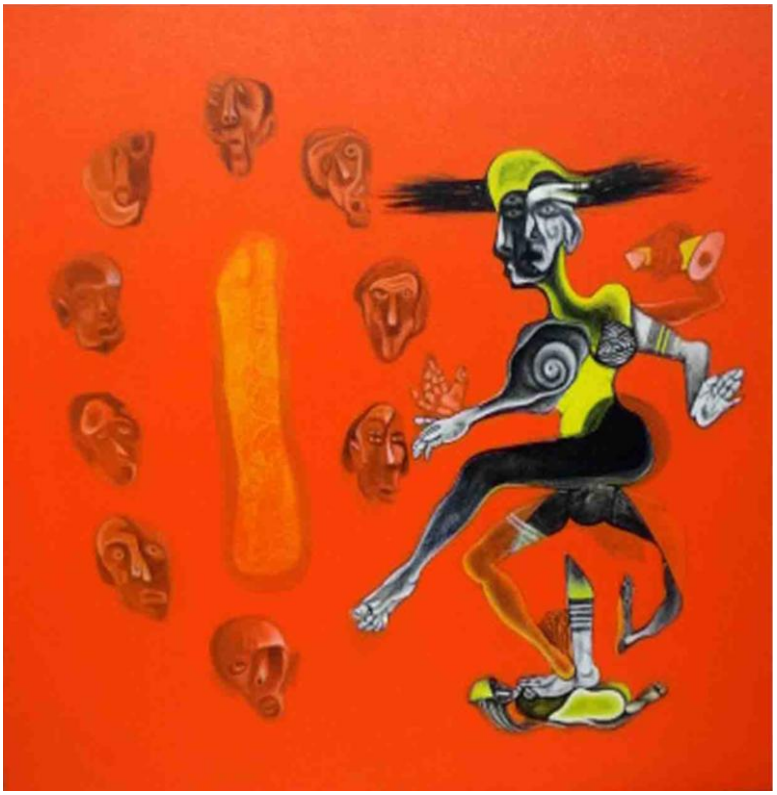

“RESTING” – Acrylic on Canvas

“RAHGIRI DAY” – Acrylic on Canvas

“WE ARE INDIAN” – Acrylic on Canvas

“MIRROR” – Acrylic on Canvas

“GAS TRAGEDY OF BHOPAL” – Acrylic on Canvas

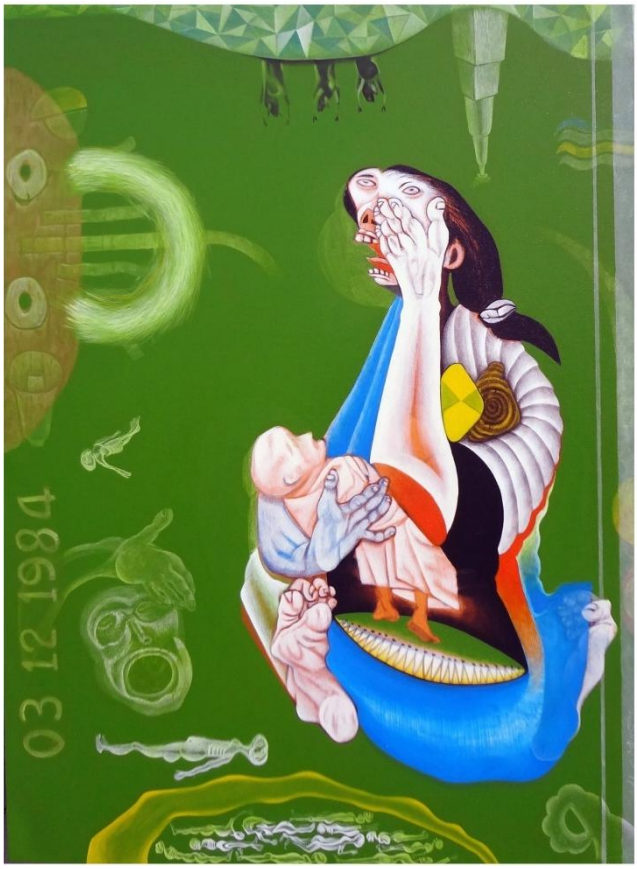

रिपोर्ट - 'चतुर्थ/अन्तिम'

श्रीमान्, आज से दो वर्ष पूर्व मैंने जो चित्र यात्रा आरम्भ की थी, अब उस यात्रा के अंतिम पड़ाव पर पहुँचकर जो संतुष्टि एवं आनन्द की अनुभूति हो रही है, वह अवर्णनीय है। इस यात्रा को आपके आशीषमय पथ प्रदर्शन एवं अनुदान राशि के बिना पूर्ण कर पाना मेरे लिए दुष्कर कार्य था।

भोपाल गैस त्रासदी, निर्भयाकांड, प्रकृति के बदलते स्वरूप, मानवता की खण्ड, खण्ड होती मूर्ति, मानवीयता का ह्रास, गाँवों में बसते भारत, झीलों की नगरी भोपाल, मानव जीवन को प्रभावित करते नव रसों के भावों को प्रस्तुत करते हुए अपनी चित्रवीथि के पहले पड़ाव पर मैंने अपने चित्रों की वीथिका को संवारा, इसे बहुत सराहा गया, जैसे कि आप जानते ही हैं चित्रकारी के क्षेत्र में मैं पिछले कई वर्षों से सक्रिय रूप से कार्य करते हुए नए सृजन कर रहा हूँ।

आपके संस्थान के नियम, शर्तों और अनुबंध के आधार पर आगे बढ़ते हुए चित्र यात्रा के प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय चरण में मैंने गणे, शिवतांडव, चक्रव्यूह में घिरे अभिमन्यु की व्यथा आज के बचपन, मेरी प्रकृति मेरी धरती, और ''सेव गर्ल चाइल्ड'' पर आधारित चित्रों को चित्र फलक पर उकेरकर मेरी तूलिका पुनः ''जन संदेश–जन जागृति'' के कार्य में संलग्न है।

कई बार आहत हो जाता था, चित्रकार मन, जब लोग कहते कि आपके चित्रों में फूलों सी कोमलता या माधुर्य क्यों नहीं, केवल ''वेदना–वीभत्सता'' क्यों छलकती है? तब मैं उनसे कहता हूँ कि वेदना ही तो सृजन की जननी है और मेरे मन में अथाह वेदना है, जो ''सार्थक–चित्र'' को जन्म देना चाहती है और लोग आश्चर्य चकित हो, मौन स्मित के साथ आगे बढ़ जाते और मैंना ह्रदय नव सर्जना में संलग्न हो उठता।

समय अपनी गति से आगे बढ़ता रहा और तूलिका अपनी गति से सृजनोन्मुख होती रही। वह दिन मेरे लिए एक नई अनुभूति लेकर आया। जब मेरी चित्रकला को 2017 के लिए राष्ट्रीय कर्नाटका ललित कला पुरस्कार से सम्मापित किया गया। मेरा ह्रदय आपके प्रति पुनः अनुग्रहित हो उठा, क्योंकि

आपके द्वारा दी गई सहायता राशि के अभाव में नव सर्जना कर पाना मेरे लिए असंभव तो नहीं परन्तु दुष्कर कार्य अवश्य था।

मैं ईश्वर, सीसीआरटी एवं अपने गुरू के प्रति आभार भाव लिए पुनः मैं अपनी यात्रा के चतुर्थ पड़ाव की ओर उत्साह से भरे पग धरते हुए आगे बढ़ चला...

आईना "The Mirror", शक्ति, हम भारतीय हैं, भोपाल का राहगिरी डे, भोपाल गैस त्रासदी पर पुनः एक नए प्रयोग कर चित्रकला को एक नया आयाम प्रदान करने का प्रयास करते हुए गोबर, राख, प्राकृतिक रंग, कागज़, रूई, सूत आदि का उपयोग कर नई चित्र प्रदर्शनी को आयोजित करने का सौभाग्य मिला।

"दिसम्बर 2017" मेरे जीवन को एक अविस्मरणीय स्मृति से सराबोर कर गया। भोपाल नगर के लोगों में, समाचार–पत्र, पत्रिकाओं ने इसे एक अद्वितीय उपलब्धि बताया, जिसका समस्त मैं अपनी कला रिपोर्ट में अपनी कला रिपोर्ट में छायाचित्र संलग्न कर प्रस्तुत रहा हूँ।

श्रीमान् सहायता राशि प्राप्त करने हेतु अंतिम प्रतिवेदन के रूप में यह धन्यवाद पत्र के साथ अपनी अंतिम कला रिपोर्ट भेज रहा हूँ। आपकी गहन संवेदनाऐं, अनुगृह, आशीष एवं दी गई सहायता राशि, फलस्वरूप मेरे जीवन के केनवास पर जो सुनहरे रंगों का चित्रांकन हुआ, उसने मुझे कृतार्थ कर दिया। जीवन डगर पर सदा आपके सहयोग के लिए आभार सहित पुनः आपकी कृपा कर आकांक्षी।

"GAS TRAGEDY OF BHOPAL-I" – Acrylic on Canvas

"GAS TRAGEDY OF BHOPAL-II" – Acrylic on Canvas

"MOTHER AND GIRL CHILD" – Acrylic on Canvas

"GAS TRAGEDY OF BHOPAL-III" – Acrylic on Canvas

“GAS TRAGEDY OF BHOPAL-IV” – Acrylic on Paper

“GAS TRAGEDY OF BHOPAL-V” – Charcol on Paper

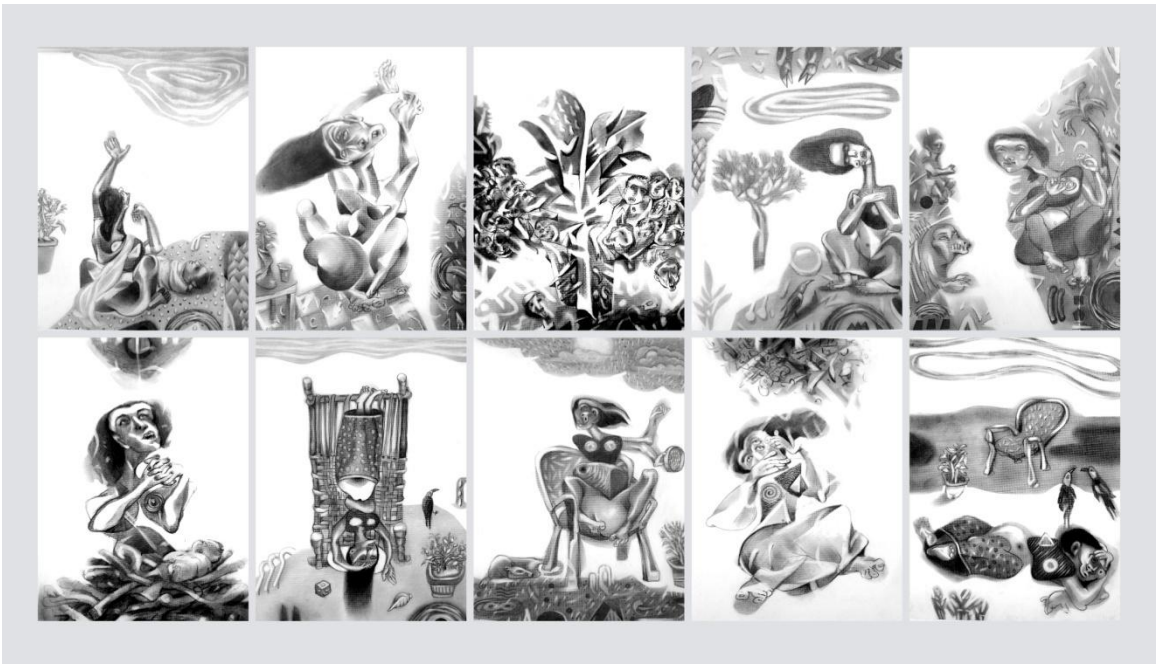

प्रदर्शनी की छायाचित्र – "Two Steps"

प्रदर्शनी की छायाचित्र – "Pages of the Past"

Invitation Card

You are Cordially Invited to
an Exhibition
of recent paintings

Pages of the Past

By

Mahesh pal Gobra

Inauguration

On Tuesday 05th Dec. 2017 at 5:pm

on view till 10th Dec.
2017, 1.00pm to 7.00

Rangdarshni Deergha

Bharat Bhavan, Shamla Hills, Bhopal

Write-up

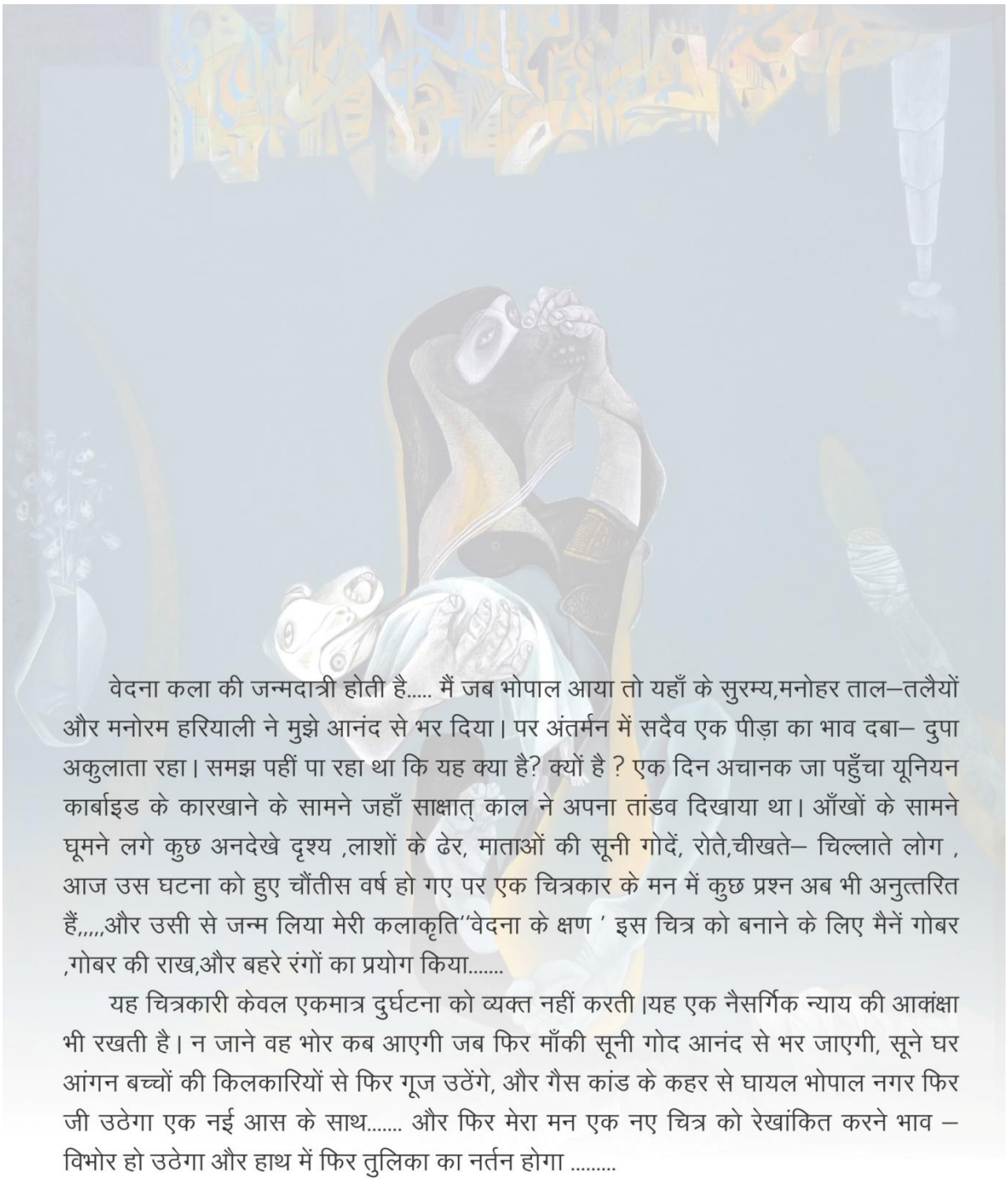

वेदना कला की जन्मदात्री होती है..... मैं जब भोपाल आया तो यहाँ के सुरम्य,मनोहर ताल–तलैयों और मनोरम हरियाली ने मुझे आनंद से भर दिया। पर अंतर्मन में सदैव एक पीड़ा का भाव दबा– दुपा अकुलाता रहा। समझ पहीं पा रहा था कि यह क्या है? क्यों है ? एक दिन अचानक जा पहुँचा यूनियन कार्बाइड के कारखाने के सामने जहाँ साक्षात् काल ने अपना तांडव दिखाया था। आँखों के सामने घूमने लगे कुछ अनदेखे दृश्य ,लाशों के ढेर, माताओं की सूनी गोदें, रोते,चीखते– चिल्लाते लोग , आज उस घटना को हुए चौंतीस वर्ष हो गए पर एक चित्रकार के मन में कुछ प्रश्न अब भी अनुत्तरित हैं,,,,और उसी से जन्म लिया मेरी कलाकृति''वेदना के क्षण ' इस चित्र को बनाने के लिए मैनें गोबर ,गोबर की राख,और बहरे रंगों का प्रयोग किया.....

यह चित्रकारी केवल एकमात्र दुर्घटना को व्यक्त नहीं करती।यह एक नैसर्गिक न्याय की आक्षा भी रखती है। न जाने वह भोर कब आएगी जब फिर माँकी सूनी गोद आनंद से भर जाएगी, सूने घर आंगन बच्चों की किलकारियों से फिर गूज उठेंगे, और गैस कांड के कहर से घायल भोपाल नगर फिर जी उठेगा एक नई आस के साथ..... और फिर मेरा मन एक नए चित्र को रेखांकित करने भाव – विभोर हो उठेगा और हाथ में फिर तुलिका का नर्तन होगा .....

– महेश पाल गोबरा

पेपर कटिंग्स - प्रारम्भिक दौर

विश्व का सर्वाधिक पढ़ा जाने वाला अखबार

दैनिक जागरण

रंगों में जीवन के दर्शन

चित्रकार महेश पाल की तीन दिवसीय एकल चित्रकला प्रदर्शनी कला वीथिका में शुरू

ग्वालियर : रंग प्रकृति की सुंदरता का अहसास कराते हैं। रंग जीवन जीने की कला सिखाते हैं, रंग खुशियों का संसार सजाते हैं। रंग जीवन के हर आनंद में अपना रंग जमाते हैं जब यही रंग सामाजिक कुरुतियों पर प्रहार कर जीवन के दर्शन कराते हैं तो वह जीवन की वास्तविकता से अवगत कराकर धर्म संस्कृति अध्यात्म से साक्षात्कार करते नजर आते हैं।

अगर आप भी जीवन की सच्चाई का सामाजिक कुरुतियों व अध्यात्म से रूबरू होना चाहते हैं तो आपको कला वीथिका में आना होगा जहां चित्रकार महेश पाल की तीन दिवसीय एकल प्रदर्शनी का आयोजन किया जा रहा है।

आयल कलर, ड्राय पिस्टल व पेंसिल से केनवास पर मनोभावनाओं द्वारा उकेरी गई 30 कलाकृतियां अपनी फिगरेटिव आकृति में जीवन के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डालती नजर आती हैं।

अनाथ बच्चों द्वारा कुछ पाने की लालसा एक पतंग की तरह उड़ने की कल्पना शक्ति उनके मन के भाव को बताती है। वहीं समाज में व्याप्त विकृतियों पर करारा प्रहार करती जन्म वाली पेंटिंग्स लोगों को सोचने पर मजबूर कर देती है। कबूतर की उड़ान बच्चे को प्रेरित करती दिखती है तो नारी के विभिन्न रूप उसके सौंदर्य का अहसास कराने के साथ उसे छले जाने की बात भी कहते हैं। गौतम बुद्ध व भिक्षुक के साथ आध्यात्म के दर्शन कराती कलाकृतियां मन को सुकून देती है और देखने वाले को कुछ पल के लिए एक अलग संसार का सुखद अहसास कराती हैं। चटक व गहरे रंगों में उकेरी गई कला कृतियां दिलों दिमाग में छिपा कुछ नया संदेश देती है।

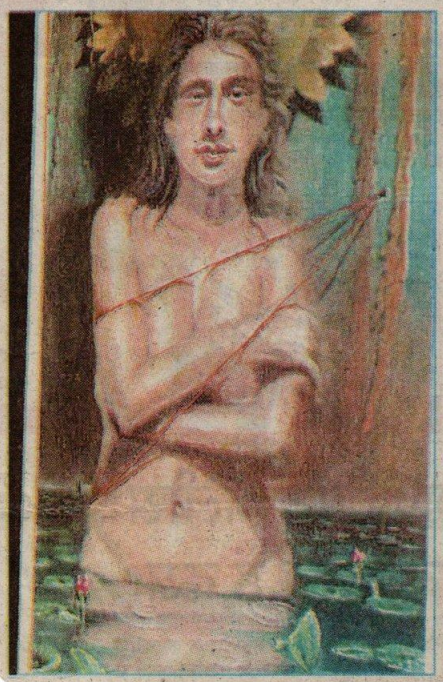

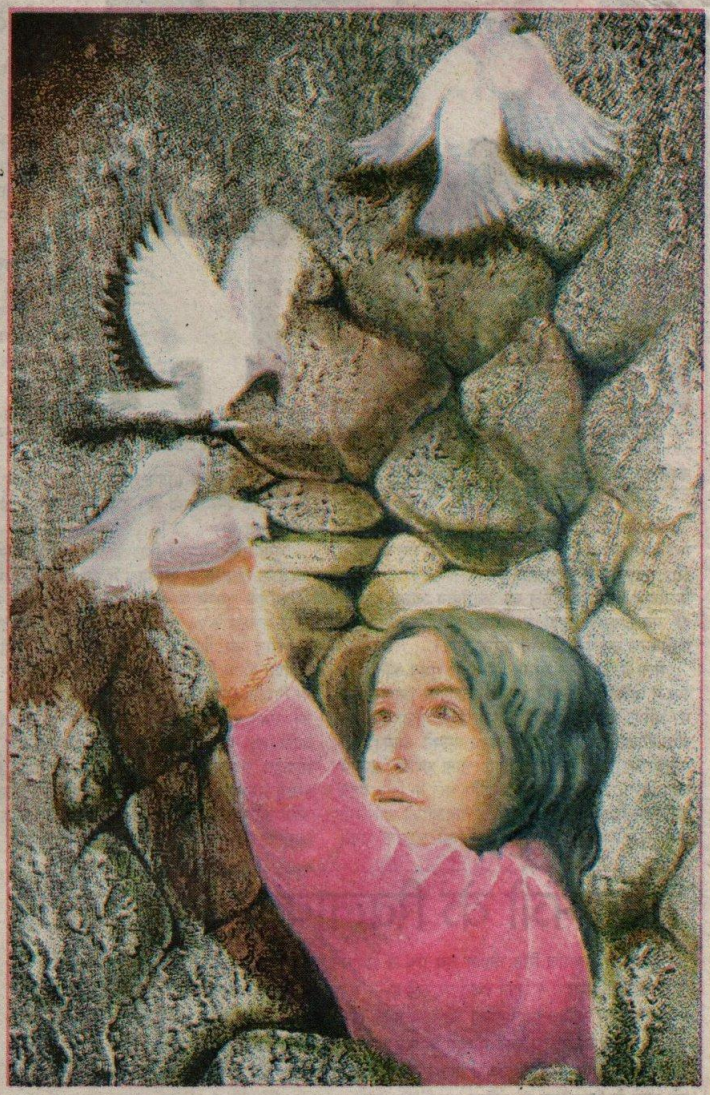

समाज का दर्पण है कला

कला समाज का दर्पण होती है और कलाकार उस दर्पण में समाज की सच्चाई से अवगत कराकर उसके वास्तविक रूप का दर्शन कराता है, जो हम शब्दों में बयां नहीं कर सकते। उसे कलाकार खामोश रहकर चित्रों के माध्यम से अभिव्यक्त कर देता है, इसलिए कलाकार को सदैव समाज को उसका चेहरा दिखाने के लिए प्रयासरत रहना चाहिए।

यह बात राजस्व राज्य मंत्री नारायण सिंह कुशवाह ने प्रदर्शनी के शुभारंभ के अवसर पर मुख्य अतिथि की हैसियत से कही। उन्होंने दीप प्रज्वलित कर प्रदर्शनी का शुभारंभ किया और चित्रों का अवलोकन कर उन्हें सराहा। नीलम चांडक व नम्रता गुप्ता विशेष रूप से उपस्थित थे। राम बघेल व लाखन सिंह ने अतिथियों का स्वागत किया। कार्यक्रम का संचालन हर्ष दीक्षित ने किया। रणजीत शिंदे का विशेष योगदान रहा।

नईदुनिया
ग्वालियर सिटी
मंगलवार 8 जनवरी 2008

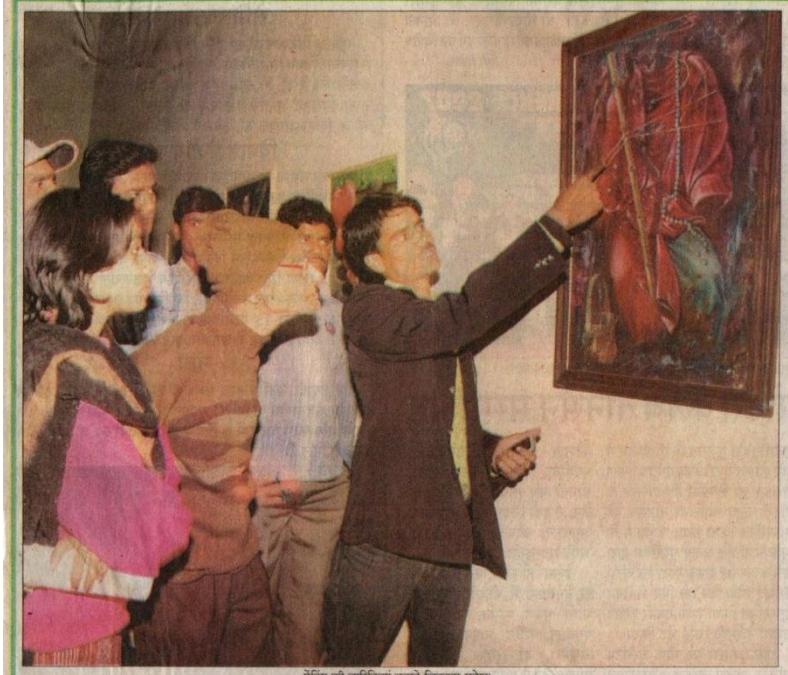

पेंटिंग की बारिकियां बताते चित्रकार महेश।

प्रदर्शनी बन गई पाठशाला

बच्चों ने जाने चित्रकार महेश से चित्रकारी के गुर

कलावीथिका में चल रही चित्रकला प्रदर्शनी का समापन हुआ

ग्वालियर। कलावीथिका में चल रही महेश पाल की तीन दिवसीय एकल चित्रकला प्रदर्शनी के आखिरी दिन कई बच्चों ने एक साथ प्रदर्शनी में लगे चित्रों का आनंद लिया। मूलत: आध्यात्म पर आधारित सधी हुई चित्रकारी को देखकर कुछ बच्चे महेश से उनकी कला का राज जाने बिना न रह सके। महेश जब बच्चों को टिप्स देने लगे तो बच्चों का जमावड़ा और उनके सवाल भी बढ़ते गए। कोई उनसे रंग संयोजन की जानकारी लेना चाहता था तो कोई ब्रश के नंबरों की, कोई कैनवास और शीट के बारे में पूछ रहा था तो कोई थीम सिलेक्शन और पेंटिंग प्रोसेस को। कुल मिलाकर महेश की प्रदर्शनी का आखिरी दिन चित्रकारी में रुचि रखने वाले बच्चों के लिए चित्रकला प्रशिक्षण का माध्यम बन गया। महेश ने भी खुले दिल से बच्चों के सवालों के जवाब दिए। इसके अलावा समापन दिवस पर नगर के कुछ चिरपरिचित चेहरे और नवोदित कलाकार भी प्रदर्शनी में नजर आए। दर्शकों के बेहतर रिस्पॉन्स के साथ महेश पाल की प्रदर्शनी का समापन हुआ।

चितेरे ने कहा, 'खुश हूँ मैं'

'चितेरे महेश पाल ने प्रदर्शनी के समापन के अवसर पर कहा कि अपनी पहली सोलो एग्ज़ीबिशन पर लोगों का प्यार, आशीर्वाद और विश्वास पाकर मैं बहुत खुश हूँ। आज लग रहा है कि मेरे माता-पिता और गुरु का प्रोत्साहन और मेरी मेहनत दोनों रंग लाए।' *-सिटी रिपोर्टर*

नईदुनिया
ग्वालियर सिटी

चितेरे महेश की कला से सजी कलावीथिका

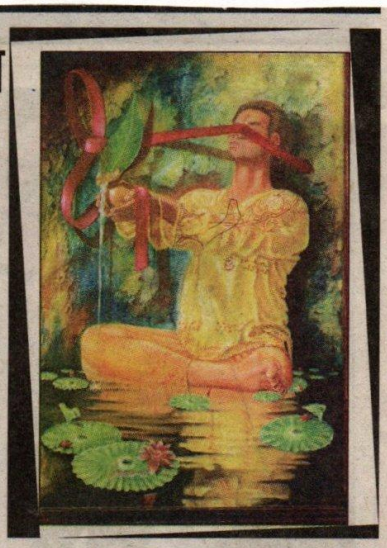

कलावीथिका में हुआ तीन दिवसीय चित्रकला प्रदर्शनी का शुभारंभ

ग्वालियर। कहीं साधक की आकृतियाँ, कहीं दुनिया की विकृतियाँ, कहीं निर्गुण-निराकार का एहसास तो कहीं मातृत्व की साकार पहचान, एक तरफ समाज की वीभत्स झलकियाँ तो दूसरी तरफ करुणा, दया और प्रेम का सागर, कहीं कलाकार की साधना और कहीं दलितों की वेदना।

इस प्रकार 30 अलग-अलग भावों को इस समय एक साथ समेट रखा है कलावीथिका की दीवारों ने। कलाकार महेश पाल अपनी एकल प्रदर्शनी के माध्यम से इस समय नगर की जनता को आध्यात्म और संसार की यथार्थ वेदना से रूबरू कराने का प्रयास कर रहे हैं। अपनी भावनाओं और अपने विचारों को जन-जन तक पहुँचाने के प्रयास में युवा कलाकार महेश पाल द्वारा कलावीथिका में लगाई गई तीन दिवसीय प्रदर्शनी का उद्घाटन मुख्य अतिथि श्री नारायणसिंह कुशवाह ने दीप प्रज्वलन के साथ किया। श्री कुशवाह के अलावा दिल्ली से आए कलाकार श्री विमल चंद्र, सुश्री नम्रता गुप्ता और डॉ. नीलम चांडक भी उद्घाटन के समय उपस्थित हुए। कलाकार महेश के माता-पिता श्री लाखनसिंह व श्रीमती शीलादेवी बघेल भी शामिल हुए।

उद्घाटन पूर्व ही जुड़ने लगी दर्शकों की भीड़ : प्रदर्शनी के उद्घाटन के पहले ही कला प्रेमी जनता ने कलावीथिका के बाहर चहल-कदमी शुरू कर दी। लोगों की इस उत्सुकता को देखकर एक बात तो सिद्ध हो ही गई कि नगर की जनता का पारंपरिक कलाओं से जुड़ाव अब भी कायम है। *-सिटी रिपोर्टर*

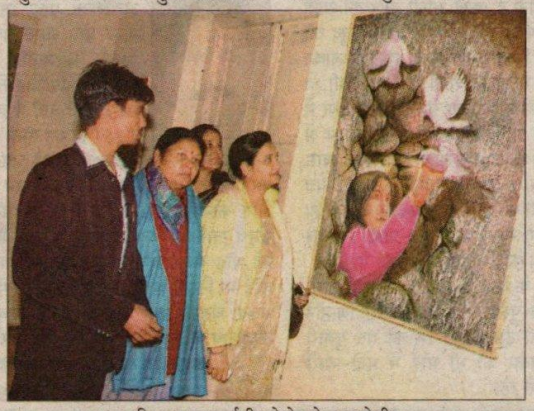

चित्रकला प्रदर्शनी को देखते कलाप्रेमी।

ये कलाकृतियाँ हुईं शामिल

कलाकार महेश ने अपनी पहली एकल प्रदर्शनी में जिन तीस पेंटिंग्स को शामिल किया है, उनका मूल विचार पर आधारित एक शीर्षक भी निर्धारित किया है। प्रदर्शनी में शामिल चित्रों के शीर्षक कुछ इस प्रकार हैं-

1. **विकृति** - 1(पैदाइशी विकृत बच्चों पर आधारित)
2. **विकृति** - 2
3. **त्रिदेव** - (ब्रह्मा, विष्णु, महेश की ध्यान मुद्रा)
4. **कमलमुखी भिक्षु**
5. **आशा** - (अनाथ बच्चों की अतृप्त अपेक्षाओं पर आधारित)
6. **निराशा**
7. **माटी का खिलौना** - (वृद्ध की मृत देह)
8. **अर्पण** - (पारंपरिक रिवाज जल अर्पण का दृश्य)
9. **आसक्ति** -(भक्ति में रमे हुए नाचते भक्त का चित्र)
10. **बचपन** - (कमल की कलियाँ और नश्वरता के प्रतीक बुलबुले का चित्र)

- प्रार्थना
- अदृश्य सत्ता की काल्पनिक छवि
- कल्पना (काई से हरी हुई पाषाण प्रतिमा)
- उमंग
- माँ
- स्टिल लाइफ
- उन्मुक्त मन
- बुद्ध की तीन ध्यान मग्न आकृतियाँ
- मॉडर्न आर्ट
- स्कैचेज

ड्रॉइंग, ड्रायपिस्टल आर्ट और मॉडर्न आर्ट से सजी दीवारें

महेश पाल ने अपनी चित्रकला प्रदर्शनी ड्रॉइंग, ड्रायपिस्टल आर्ट और मॉडर्न आर्ट के समावेश से संजोया है। कई चित्र कैनवास पर उकेरे गए हैं और कई हार्ड शीट पर। फैब्रिक, ड्रायपिस्टल और वॉटर कलर्स से रंगों के बेहतरीन संयोजन के साथ विभिन्न विचार चित्र रूप में उकेरे गए हैं। प्रदर्शनी के चित्रों में एक ओर जहाँ सधे हुए ब्रश की कारीगरी नजर आ रही है, वहीं दूसरी ओर उँगलियों से उभारे गए सधे हुए चित्र प्रदर्शनी की शोभा बढ़ा रहे हैं। कुल मिलाकर, अलग-अलग तरीकों से बनाई गई 30 कलाकृतियाँ इस समय लोगों के आकर्षण का केंद्र बनी हुई हैं।

प्रदर्शनी की पेपर कटिंग – "Pages of the Past"

पेन आर्ट, पेंसिल स्केच, मिक्स मीडिया और इंस्टालेशन में उकेरा गैस त्रासदी का मंजर

भारत भवन में चित्रकार महेश पाल की गैस त्रासदी पर फोटो एग्जीबिशन

यंग रिपोर्टर ● भोपाल
editor@peoplessamachar.co.in

दुख या संवेदना को काले रंग के जरिये दिखाया जाता है। ब्लैक एंड वाइट कलर को बखूबी इस्तेमाल करते हुए उस मोमेंट को कैप्चर किया। एक आर्टिस्ट के तौर पर उस मोमेंट पर मौजूद ना होने के बावजूद भी उन्होंने उस दर्द को तकलीफ को कैनवास पर पेन, पेंसिल और ऐक्रेलिक कलर्स के जरिए बयां किया है। एक टॉपिक को लेकर आर्टिस्ट कितना प्रभावित होता है ये इस पेंटिंग सीरीज में देखने को मिलता है। एक कलाकार की पूरी क्षमता भारत भवन में चल रही सोलो एग्जीबिशन में एग्जीबिट हुयी महेश पल की बनाई पेंटिंग्स में देखने को मिली।

लोगों के बीच रहकर महसूस किया उनका दर्द

भोपाल गैस त्रासदी पर केंद्रित ऐसी ही पेंटिंग मंगलवार को भारत भवन की रंगदर्शिनी दीर्घा में देखने को मिल रही है, इस एग्जीबिशन को आर्ट लवर्स और दर्शकों का अच्छा रिस्पोंस मिल रहा है। एग्जीबिशन में महेश की बनाई 100 पेंटिंग्स डिस्प्ले की गई हैं। महेश ने एक्रेलिक कलर ऑन पेपर, एक्रेलिक कलर ऑन कैनवास पर और स्मोक्स इन पेपर के माध्यम से इन चित्रों को तैयार किया है। इन चित्रों में गैस त्रासदी के बाद किस तरह से पूरे शहर में अफरा-तफरी का माहौल था, तलाब किनारे लाशों का मंजर था और हर जगह चीखें सुनाई दे रहीं थीं। उन लोगों के बीच रहकर ही उनकी तकलीफ और दर्द को समझने के बाद मैंने ये पेंटिंग कलेक्शन तैयार किया।

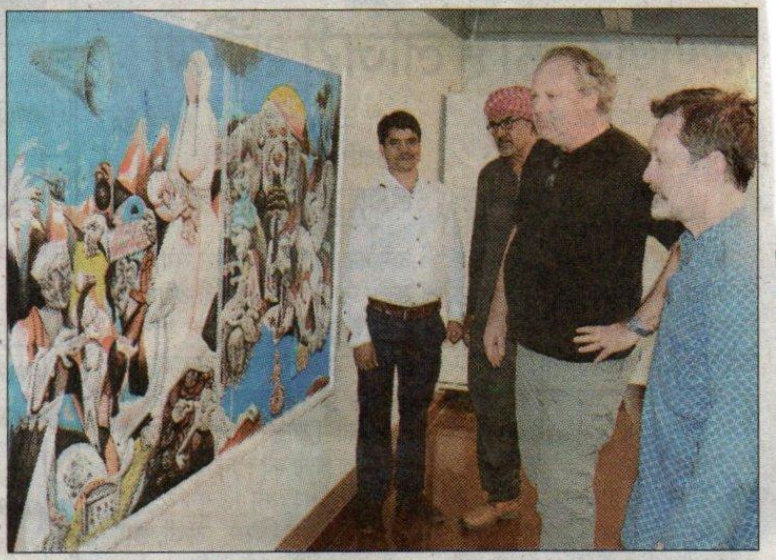

दो साल में तैयार की ये कलेक्शन

महेश ने 100 पेंटिंग्स को बनाने के लिए लगभग 50 ब्रश का इस्तेमाल किया। उन्होंने पेंटिंग बनने के बाद उन सभी ब्रश को श्रद्धांजलि स्वरूप इस एग्जीबिशन में डिस्प्ले किया है। एक इंस्टॉलेशन के माध्यम से उन्होंने एंडरसन को वर्तमान समय में दिखाने का प्रयास किया है। महेश कहते हैं कि मैंने जब इन पेंटिंग को बनाना शुरू किया था, उस समय मेरे घर में अलग ही माहौल था। घर के सभी सदस्य और मैं इन चित्रों को देखकर भावुक हो उठे, कई बार तो मैं इतना ज्यादा भावुक हो जाता था कि बीच में ही काम छोड़ देता था।

ARTIST MAHESH PAL PRESENTS ART SERIES WITH UNIQUE INSTALLATION IN REMEMBRANCE OF THE GAS LEAK DISASTER IN 1984

Gas leaks from human face in Bhopal's biggest tragedy

DB Post Correspondent

Bhopal: The *Rupabh* series of Bharat Bhavan is showcasing a unique art exhibition portraying the Bhopal gas leak disaster at its new exhibition, which opened at Rangdarshini Dirgha on Tuesday. Artist Mahesh Pal has researched for two years to know the pain of the gas tragedy survivors to bring this series.

Raw thoughts from the ground

It was a very tough — and time-consuming — process for Mahesh to gather his raw thoughts. Although he was aware of the Bhopal gas tragedy from his schooldays, it was only after he came to Bhopal that he realised the magnitude of the problems yet to be resolved. He decided to make a series on the survivors' sufferings and found these three ways to feel their pain:

News reports: He went through various news reports on the disaster to know all about the tragedy.

Ground visit: He met many gas-affected people and realised how deeply they still felt their pain. Their kids were all afflicted by congenital defects caused by the toxicity.

Hospital visit: Hospital visits were the most common exercise he carried out. The equipment to treat gas survivors in hospitals established for them was lying inoperable and experts were missing.

EXPERIMENTS, INNOVATIONS

- He also made some installations
- A grand installation has a human face with gas leaking from its eyes, ears & mouth
- To symbolise communication during the tragedy, he created a loudspeaker on an installation

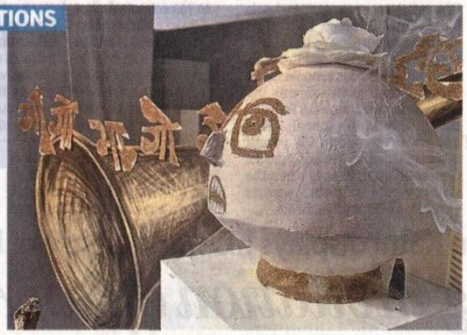

THINGS TO DO TODAY

D. B. Post 6-12-17

पेंटिंग्स में गैस ट्रेजडी की रात का नजारा

पत्रिका 6-12-17

भारत भवन में आर्टिस्ट महेश पाल की सोलो पेंटिंग एग्जीबिशन का शुभारंभ

पत्रिका PLUS रिपोर्टर

भोपाल ● सन् 1984.... 2 और 3 दिसंबर की दरम्यानी वो भयावह रात, जिसको याद करके आज भी लोगों की रूह कांप उठती है। इसी भोपाल गैस ट्रेजडी पर भोपाल के आर्टिस्ट महेश पाल ने पेंटिंग्स तैयार की है। इस एग्जीबिशन का मंगलवार को भारत भवन में शुभारंभ हुआ। एग्जीबिशन में महेश द्वारा तैयार की गई करीब 100 पेंटिंग्स डिस्प्ले की गई हैं। महेश ने एक्रेलिक कलर ऑन पेपर, एक्रेलिक कलर ऑन कैनवास और स्मोक्स इन पेपर के माध्यम से आकर्षक चित्रों को तैयार किया। इन चित्रों में दिखाया गया है कि गैस ट्रेजडी के बाद किस तरह पूरे शहर में अफरा-तफरी का माहौल था, तालाब किनारे लाशों का अंबार, हर जगह चीखें आदि को रंगों के माध्यम से दिखाया।

महेश बताते हैं कि मैं वर्ष 2010 में ग्वालियर से भोपाल आया। इस दौरान एक दिन मैं अचानक यूनियन कार्बाइड फैक्ट्री वाले इलाके में गया। इसे देखने के बाद मैंने अपने मकान मालिक और दोस्तों से इसके बारे में सुना। यही से मैंने इस पर पेंटिंग बनाने का निश्चय किया। करीब दो साल की मेहनत के बाद आज यह वर्क आप लोगों के सामने है।

50 ब्रश के जरिए दी गैस पीड़ितों को श्रद्धांजलि

महेश ने 100 पेंटिंग्स को बनाने के लिए लगभग 50 ब्रशों का इस्तेमाल किया। इस दौरान उन्होंने पेंटिंग पूरी होने के बाद उन सभी ब्रशों को श्रद्धांजलि स्वरुप एग्जीबिशन में डिस्प्ले किया हुआ है। महेश ने इंस्टॉलेशन के माध्यम से एंडरसन को वर्तमान समय में दिखाने का प्रयास किया है। महेश ने बताया कि जब मैंने इन पेंटिंग्स को बनाना शुरू किया था तो परिवार के सभी सदस्य इन चित्रों को देखकर भावुक हो उठे। कई बार तो मैं खुद इतना ज्यादा भावुक हो जाता कि बीच में ही काम छोड़ देता था।

City journal
FREEPRESS
Tuesday
December 29, 2015

From corruption to Rahgiri, Gobra has a wide canvass

• OUR STAFF REPORTER
BHOPAL

Some experimental works, based on contemporary issues of city-based artist Mahesh Pal Gobra, showcased at Swaraj Vithika Art Gallery, are cattracting the art lovers. It was the second day of his three-day solo painting exhibition 'Two Steps'. Based on various issues including corruption, as many as thirty semi-abstract works of Pal are on display in the gallery. He painted his works by using water colour, acrylic on canvas and paper. He painted the consequences of dirty politics including corruption by using acrylic on canvas.

Another three big acrylic works are dedicated to the Nirbhaya case. In these works, he raises voice against corruption and rges narrow-minded per- s not to pollute society.

An art-lover watches paintings displayed in an exhibition at Swaraj Bhavan on Monday.

In another acrylic works, the artist also painted different expressions of dancing Natraj, , how third eyes of Lord Shiva works, nine expression of human beings, beauty of city of lakes, his childhood memory wonderfully by using acrylic on canvas, paper and water colour. He also displayed some panels in which he tried to show struggle of youth. He also painted scenes of Rahgiri Day of Bhopal beautifully by drawing work

"It is five year collection of my work and it's second solo exhibition in Bhopal," added Gobra. The exhibition will remain open for visitors till December 29 from 2 to 8pm.

पीपुल्स समाचार
भोपाल, बुधवार 6 दिसंबर 2017
iam BHOPAL
movies • fashion • trends • lifestyle • what's in store • art • theatre • food • gossip • parties 11

भोपाल गैस त्रासदी के दर्द, करुणा, ममता, डर और खौफ की 100 तस्वीरें

भारत भवन की रंगदर्शनी दीर्घा में आयोजित आर्टिस्ट महेश पाल की पांच दिवसीय एग्जीबिशन

यंग रिपोर्टर • भोपाल
मोबाइल नं. 7067730336

एक कलाकार किसी विषय से प्रभावित होकर किस तरह उसकी गहराइयों में उतर सकता है, इसका सटीक उदाहरण महेश पाल की चित्रकृतियों में देखा जा सकता है। गैस त्रासदी के दर्दनाक मंजर को आंखों देखी की तरह कैनवास और कागज पर बयां करने की कोशिश भारत भवन में आयोजित 5 दिवसीय कला प्रदर्शनी में देखने को मिली।

भारत भवन की रंगदर्शनी दीर्घा में आयोजित इस प्रदर्शनी में दर्द, पीड़ा, करुणा, ममता, डर और खौफ के मंजर को 100 से अधिक कलाकृतियां में देखने को मिला। इस प्रदर्शनी में 2 दिसंबर की उस रात के भयानक दृश्य को उन्होंने पेन आर्ट, पेंसिल आर्ट, एक्रेलिक वर्क, मिक्स मीडिया और इंस्टालेशन के जरिए बखूबी लोगों के समक्ष प्रस्तुत किया है।

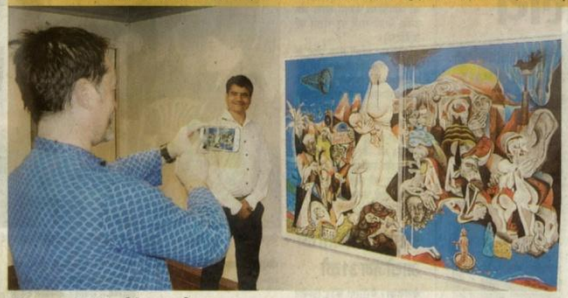

दो साल की रिसर्च के बाद तैयार की ये कलाकृतियां

आर्टिस्ट महेश पाल का कहना है कि उन्होंने यह पेंटिंग्स उन लोगों के बीच 2 साल गुजारने और पूरे रिसर्च वर्क के बाद तैयार की है। उन्होंने बताया कि पहले मैं ये सिर्फ भोपाल की खूबसूरती को ही कैनवास पर उतारा करता था। लेकिन एक दिन मेरी मकान मालकिन ने मुझसे कहा कि तुम एक कलाकार हो अगर भोपाल दिखाना ही चाहते हो तो इसके दर्द भरे हिस्से, गैस कांड पर भी कुछ काम करो। मकान मालिक के कहने भी इस हादसे का शिकार हुए थे। उस वक्त क्या हुआ और कैसे हुआ ये सब जानने के लिए मैं उन लोगों से मिला। उनके बीच रहकर उनका दर्द महसूस किया। इंटरनेट के जरिये भी बहुत कुछ खोजा। इस तरह 2 सालों में मैंने ये सीरीज तैयार की।

आर्टिस्ट ने उस मंजर को अपनी शैली में बखूबी उतारा

अगर हम एग्जीबिशन गैलेरी की शुरुआत से लेकर आखिर तक हर कलाकृति को देखते हैं, तो कहीं ना कहीं यो सारा मंजर हमारी आंखों के सामने नजर आने लगता है। एक गुरु के तौर पर मैं सिर्फ यही कहना चाहूंगी कि महेश अपने काम में पूरी तरह इन्वॉल्व होकर काम करता है। चीजों में गहरे उतरकर उसे अपनी शैली में ढालना उन्हें आता है। एक दर्द से ना गुजरते हुए भी उस तकलीफ और पीड़ा की गहराई को इस कदर बयां कर पाना एक आर्टिस्ट की असल जीत है।

- डॉ. अपर्णा अनिल, आर्टिस्ट

पेंटिंग्स में बयां हुई एक कलाकार की पूरी क्रिएटिव क्षमताएं

दुख या संवेदना को काले रंग के जरिये ही दिखाया जाता है। ब्लैक एंड वाइट कलर का बखूबी इस्तेमाल करते हुए उस गैस त्रासदी की रात के उस मंजर को कागज पर शक्ल दी। एक आर्टिस्ट के तौर पर उस मोमेंट पर मौजूद ना होने के बावजूद भी आर्टिस्ट महेश ने उस दर्द को तकलीफ को कैनवास पर पेन, पेंसिल और एक्रेलिक कलर्स के जरिए सराहनीय तरीके से बयां किया है। एक टॉपिक को लेकर आर्टिस्ट कितना प्रभावित होता है ये इस पेंटिंग सीरीज में देखने को मिलता है। एक कलाकार की पूरी क्षमता इन पेंटिंग्स में देखने को मिली।

- संजू जैन, सीनियर आर्टिस्ट

ऐसे तैयार करें नई उम्मीदों का खूबसूरत भोपाल

लोगों ने जो फेस किया वो दर्द व पीड़ा उनके काम में झलक रही है। आज हम उन लोगों से बात कर सकते हैं लेकिन उन लोगों ने जो कुछ भी उस दौरान सहा होगा उसे महसूस कर पाना संभव नहीं। लेकिन इन चित्रों के माध्यम से उन्होंने उससे रात का मंजर अबके सामने ला खड़ा किया। रंगों का सही संयोजन और हर पेंटिंग के पीछे छिपे हजारों भाव मानों हर एक शख्स अपनी आप बीती बयां कर रहा हो। साथ ही मिक्स मीडिया के जरिए उन्होंने बखूबी एक नया भोपाल दिखाने का भी बड़ी खूबसूरती से प्रयास किया।

- मनीषा गोहिल जैन, आर्टिस्ट

वेदना और करुणा के साथ क्रोध का समावेश

गैस त्रासदी की पीड़ा को बहुत अच्छे से दर्शाया गया है। उस दौरान सभी ने परेशानियां उठायीं। महिलाओं ने कितनी पीड़ा सही। नारी शक्ति को दिखाया कि कैसे इतनी पीड़ा सहने के बाद भी उन्होंने फिर से जिन्दगी की शुरुआत की। टूट कर बिखर गईं लेकिन फिर शुरुआत की। कई मायनों में यह पेंटिंग मानव हृदय को झकझोर देती है। साथ ही साथ उन्होंने इन पेंटिंग्स में वेदना और करुणा के साथ क्रोध का जिस तरह समावेश किया है। वह भी काबिले तारीफ है।

- ममता माहेश्वरी, केमेस्ट्री प्रोफेसर, नूतन कॉलेज

पीपुल्स समाचार | भोपाल, सोमवार 28 दिसंबर 2015

iam BHOPAL

movies • fashion • trends • lifestyle • what s in store • art • theatre • food • gossip • parties

समाज की परिस्थितियों को कैनवास पर उकेरा

यंग रिपोर्टर • भोपाल
editor@peoplessamachar.co.in

कहीं लाइफ के एंजॉयमेंट को, तो कहीं पर भ्रष्ट राजनीति को, तो कहीं पर लेक सिटी की सुंदरता को विभिन्न रंगों के माध्यम से कैनवास पर उकेर कर समाज के प्रति सकारात्मक सोच को प्रस्तुति किया। अवसर था रविवार को स्वराज भवन में चित्रकार महेश पाल गोबरा के द्वारा से आयोजित 'टू स्टेप मूव ऑन पॉजिटिव' एग्जीबिशन का। इस एग्जीबिशन में विभिन्न थीम पर लगभग 30 पेंटिंग को प्रस्तुत किया गया। एग्जीबिशन का शुभांरभ प्रसिद्ध मूर्तिकार अनिल ने किया।

स्वराज भवन में आयोजित चित्र प्रदर्शनी को देखती युवतियां।

बताया राहगीरी डे को

महेश पाल ने बताया कि वह दोस्तों के कहने पर राहगीरी डे पर लेक पर गए और जैसा दोस्तों ने कहां था कि चल मजा आएगा सब अपनी-अपनी मस्ती में मस्त व एंजॉय करते हैं। वैसा ही देखने को मिला। तो मैंने सोचा क्यू ना यहां की पॉजिविटी को और एंजॉयमेंट को अपनी पेंटिंग पर उकेरा जाए। उन्होंने बताया कि मैंने भी कैनवास पर राहगीरी डे पर जाने वाले लोगों को और वहां पर एंजॉय कर रहे सभी लोगों को उकेर कर यह दिखने कि कोशिश की जब हम सब मिल कर एंजॉय कर सकते हैं तो फिर यह धर्म के नाम पर क्यों लड़ते हैं।

सकारात्मक सोच का संदेश

महेश ने बताया कि जिस तरह से समाज में दिन-प्रतिदिन बलात्कार की घटनाएं हो रही हैं, जो इस तरह की वारदातों को अंजाम देते हैं। उनसे मैंने अपनी पेंटिंग के माध्यम से कहना चाहता हूं कि वह अपना गुस्सा, क्रोध और दिमाग का उपयोग किसी अच्छी जगह निकाले और समाज में अच्छी भावना के साथ जिए।

city भास्कर
BHOPAL, MONDAY, 28/12/2015

हर पेंटिंग में छिपे हैं कई संदेश

स्वराज भवन में आर्टिस्ट महेश पाल गोबरा की पेंटिंग एग्जीबिशन का रविवार को शुभारंभ

PAINTING EXHIBITION

सिटी रिपोर्टर • पूरी दुनिया एक दौड़ में शामिल हो चुकी है, लेकिन कोई नहीं जानता कि आखिर उन्हें पहुंचना कहां हैं। अपनी पेंटिंग्स के जरिए ऐसे ही विचारों को प्रस्तुत करने वाले चित्रकार महेश पाल गोबरा की सोलो पेंटिंग एग्जीबिशन रविवार से स्वराज भवन में शुरू हुई। लगभग 30 चित्रों के जरिए उन्होंने खुद को अर्जुन की स्थिति में रखा है और वे समाज की तमाम परेशानियों से जूझते, तो कभी स्वयं में सुधार करते नजर आते हैं। उनकी हर पेंटिंग में कई संदेश छिपे हैं। उनका कहना है कि यह कृतियां स्त्रियों की शिक्षा, बेटियों की सुरक्षा और उनके उत्थान के लिए किए गए प्रयासों का एक हिस्सा हैं। वहीं, भारतीयों की शक्ल-सूरत को लोकशैली में प्रस्तुत किया है। इसके अलावा पेंटिंग्स में भोपाल के बड़े तालाब में राजा भोज की प्रतिमा और राहगीरी के दौरान भोपालवासियों के एंजॉयमेंट और उनके चेहरों को भी उकेरा है।

आर्टिस्ट का एक्सपेरिमेंट, पेंटिंग करके आपको मिलेगा सुकून

महेश गोबरा ने एग्जीबिशन में पहुंचने वालों को अपनी भावनाएं व्यक्त करने का एक नायाब तरीका निकाला है। उन्होंने एक पेंटिंग को अधूरा छोड़ दिया है। पेंटिंग के सामने एक्रेलिक कलर्स, हथौड़ी और अन्य टूल्स हैं। इस बड़े कैनवास पर कोई भी आर्ट लवर अपनी भावनाओं को इस पर उकेर सकता है। इसके माध्यम से वह खुशी, नाराजगी या कुंठा को अपने ढंग से कैनवास पर उतारकर दिमाग को रिलेक्स कर सकता है। एग्जीबिशन 29 दिसंबर (मंगलवार) तक दोपहर 2 से रात 8 बजे तक दर्शकों के लिए ओपन रहेगी।

परंपराओं-संस्कृति का प्रतीक है 'धागा-बाना'

सिटी रिपोर्टर • माह के प्रादर्श के रूप में दिसंबर महीने के लिए प्रदर्शित अहीर समुदाय का पारंपरिक आभूषण 'धागा-बाना' कलाप्रेमियों के लिए आकर्षण का केन्द्र बना हुआ है। इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मानव संग्रहालय के अंतरंग भवन, वीथि संकुल में प्रदर्शित यह कृति मध्यप्रदेश के मंडला और डिंडोरी जिलों में अहीर समुदाय के पुरुषों द्वारा धारण किया जाने वाला एक पारंपरिक आभूषण है। इसके दो मुख्य भाग होते हैं। पहला धागा और दूसरा बाना होता है। धागा को शरीर के ऊपरी भाग और बाना को कमर के नीचे पहना जाता है। अहीर मुख्य रूप से चरवाहे और पशुपालक होते हैं। इनका विस्तार बिहार, उप्र, छग और पूर्वी मप्र में है। वे स्वयं को यदु का वंशज मानते हैं। इस समुदाय के लोग ग्वाल, ग्वाली, गोलकार, ग्वालिन, रावत, गहारा, महाकुल आदि नामों से भी जाने जाते हैं। प्रस्तुत प्रादर्श अहीर समुदाय द्वारा उनके धार्मिक अनुष्ठान और त्योहारों में सांस्कृतिक पहचान के रूप में उपयोग किया जाने वाला एक आभूषण है।

जागरण 7-12-17

कैनवास में कैद भोपाल का दर्द

भारत भवन में युवा चित्रकार महेश पाल के गैस त्रासदी पर 100 चित्र

• जागरण रिपोर्टर •

लोगों के दर्द और तकलीफ से जुड़ा नाम 'भोपाल गैस त्रासदी'। यह नाम सुनते ही भोपाल का दर्द कई लोगों की आंखों के सामने आ जाता है। इस दर्द को कैनवास पर कैद करने का काम किया आर्टिस्ट महेश ने। उन्होंने भोपाल गैस त्रासदी पर अपनी 100 पेंटिंग्स को इन दिनों भारत भवन में एग्जिबिट किया है। महेश ने एक्रेलिक कलर ऑन पेपर, एक्रेलिक कलर ऑन कैनवास पर और स्मोक्स इन पेपर के माध्यम से इन चित्रों को तैयार किया है। इन चित्रों में गैस त्रासदी के बाद किस तरह से पूरे शहर में अफरा-तफरी का माहौल था, तालाब किनारे लाशों का मंजर था और हर जगह चीखें सुनाई दे रहीं थीं, को रंगों के माध्यम से दिखाया है।

50 ब्रश को भी किया एग्जीबिट

महेश ने 100 पेंटिंग्स को बनाने के लिए लगभग 50 ब्रश का इस्तेमाल किया। उन्होंने पेंटिंग बनने के बाद उन सभी ब्रश को श्रद्धांजलि स्वरूप इस एग्जीबिशन में डिस्प्ले किया है। एक इंस्टॉलेशन के माध्यम से उन्होंने एंडरसन को वर्तमान समय में दिखाने का प्रयास किया है। महेश कहते हैं कि जब मैंने इन पेंटिंग्स को बनाना शुरू किया था, उस समय मेरे घर में अलग ही माहौल था। घर के सभी सदस्य और मैं इन चित्रों को देखकर भावुक हो उठे। कई बार तो मैं इतना ज्यादा भावुक हो जाता था कि बीच में ही काम छोड़ देता था।

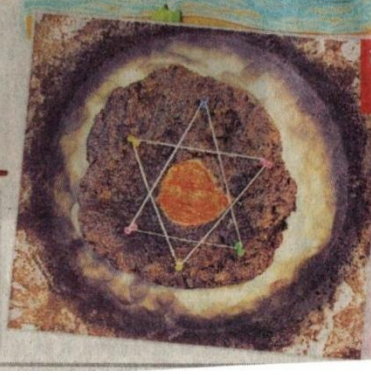

कंडों पर उस मृत बच्चे का यादगार चित्र

इसके अलावा महेश ने एक पेंटिंग में कंडे पर उस मृत बच्चे का चेहरा उकेरा है, जिसमें बच्चे के चेहरे का कंकाल जमीन में धंसा हुआ है। यह भोपाल गैस त्रासदी का ऐसा चित्र था, जिसे देख आज भी आंखों में आंसू आ जाते हैं।

प्रदर्शनी की पेपर कटिंग – “Two Steps”

अपना शहर सिटी लाइव नवदुनिया | 18

भोपाल, सोमवार 28 दिसंबर 2015

स्वराज वीथि में तीन दिवसीय पेंटिंग एक्जिबिशन की शुरुआत

महेश की चित्रकारी में 'निर्भया' का दर्द

स्वराज वीथिका में शुरू हुए में पेंटिंग प्रदर्शनी में निर्भया के दर्द को बयां करती एक कृति।

भोपाल। पहली बार किसी पेंटिंग एक्जिबिशन में पेंटिंग के नीचे रंग, ब्रश, प्लायर, आरी और चाकू रखी नजर आई। कलाकार से पूछने पर जवाब मिला- 'यह सब चीजें उन लोगों के लिए हैं, जिनके अंदर किसी भी तरह का गुस्सा व्याप्त है। किसी 'निर्भया' को अपमानित करने वाले वहशी लोगों के लिए रंग भी रखा है। दिमाग का सारा कचरा मेरी पेंटिंग पर उड़ेल दें, लेकिन दुनिया को गंदा न करें।' यह जवाब था आर्टिस्ट महेश पाल गोबरा का, जिनकी थीम बेस्ड पेंटिंग्स की एक्जिबिशन रविवार से स्वराज वीथिका में शुरू हुई है। एक्जिबिशन का शुभारंभ स्कल्पचर आर्टिस्ट अनिल कुमार ने किया।

राहगीरी की हलचल

भोपाल पर केंद्रित 5 पेंटिंग्स भी देखने को मिलीं। इनमें राहगीरी डे की हलचल नजर आई। साथ ही भोपाल की भीड़ भी। पेंटिंग्स में बड़े तालाब में राजा भोज की मूर्ति, चौराहों पर लगे लैंप और अग्रसेन चौराहे पर भोपाल की पहचान दिखी।

निगेटिव थीम पर 'निर्भया' सीरीज

एक्जिबिशन में 06 पेंटिंग्स 'निर्भया' को समर्पित है। इनकी थीम '2 स्टेप्स अहेड' रखी गई। महेश कहते हैं, 'मैंने यह पेंटिंग्स निगेटिव थीम में बनाई हैं। साल 2012 में 'निर्भया' की न्यूज सुनकर मैं कई रातों तक सो नहीं पाया था। गुस्सा आ रहा था और अफसोस भी था कि आखिर मानवता कहां खो गई है। वही गुस्सा निकालने के लिए मैंने 'निर्भया सीरिज' बनाई। इसमें मिक्स एब्सट्रैक्ट फॉर्म में दुनिया के हालातों को बयां किया गया है।

रात 3 बजे बनाता हूं पेंटिंग्स

'मैं आर्टवर्क रात 3 से सुबह 6 बजे के बीच करता हूं। फिर लोग जाग जाते हैं। मैं दूसरे कामों में लग जाता हूं। लगभग सभी पेंटिंग्स रात तीन बजे के बाद ही बनी हैं। मैं पेंटिंग्स बनाने के लिए 'नो-डिस्टर्बेन्स' टाइमजोन चुनता हूं।'

पत्रिका . भोपाल
MONDAY
28.12.15
पत्रिका plus

ALUMNI MEET

मैनिट के एल्मनाय ने बोट क्लब क्रूज पर, तो जीएम

अपना गुस्सा मेरी पेंटिंग्स में निकाल लो

plus रिपोर्टर
bhopalplus@epatrika.com

'निर्भया से पहले और उसके बाद देश में कितनी और लड़कियों के साथ बुरा हुआ। यह सब समाज में न जाने कब तक चलेगा। इस सबको रोकने के लिए हमें दो कदम आगे बढ़ना होगा। लड़कियों को भी मैं अपनी इन पेटिंग्स के जरिए यही कहना चाहूंगा कि पढ़ो, लिखो, स्ट्रांग बनो और खूब आगे बढ़ो। अपनी रक्षा खुद करो।' अपनी पेंटिंग्स के जरिए यह संदेश दिया महेश पाल गोबरा ने। रविवार को स्वराज भवन में महेश की पेंटिंग एग्जीबिशन 'टू स्टेप्स' लगी। महेश ने बताय कि समाज में होने वाली अमानवीय हरकतों से मेरा बहुत दिल दुखता है और मैं चाहता हूं जिनके साथ भी बुरा हुआ है, वे सब मेरी पेंटिंग्स में चिल्लाकर अपना पूरा गुस्सा निकाल दें। कुल 21 पेंटिंग्स एग्जीबिट हुईं।

नवरसों की नौ पेंटिंग्स

महेश ने वीर, श्रंगार जैसे सभी नौ रसों की नौ पेंटिंग्स बनाई। छोटे-छोटे बच्चों के दिमाग में एनिमल्स, नेचर आदि को देखकर क्या प्रतिक्रिया होती है। इसे महेश ने कैनवस पर उकेरा है।

भ्रष्ट पॉलिटिक्स पर निशाना

महेश ने अपनी पेंटिंग्स में महिलाओं की समाज में बुरी स्थिति के साथ देश की भ्रष्ट पॉलिटिक्स को भी दिखाया। उन्होंने अपनी पेंटिंग्स में दिखाया कि कुर्सी को लोग अपना ईश्वर मान लेते हैं। साथ ही नटराज और देवी-देवताओं के अलग-अलग रूप भी बनाए। महेश ने इन रूपों को कोई चेहरा नहीं दिया।

दृढ़ इच्छा शक्ति होना चाहिए

हमारे पास दृढ़ इच्छा शक्ति और डेवलपमेंट का विजन होना चाहिए। नागरिकों को भी अपनी जिम्मेदारी समझनी चाहिए।

-बाबूलाल गौर, गृह मंत्री, मध्यप्रदेश

login: www.haribhoomi.com

हरिभूमि भोपाल, सोमवार, 28 दिसंबर 2015 13

नारी शक्ति और प्रकृति को उकेरा कैनवास में

हरिभूमि न्यूज, भोपाल

स्वराज भवन में रविवार को एकल चित्र प्रदर्शनी 'टू स्टेप्स' का शुभारंभ हुआ। इस प्रदर्शनी में आर्टिस्ट महेश पाल गावरा ने अपने 30 चित्रों को प्रदर्शित किया है। कैनवास पर उकेरे इन चित्रों में उन्होंने एक्रेलिक कलर का उपयोग किया है। वे बताते हैं कि पिछले पांच साल का कार्य उन्होंने इस प्रदर्शनी में दिखाया है।

विभिन्न थीमों को लेकर उन्होंने सामाजिक जागरुकता को अपने चित्रों के माध्यम से दर्शाया है। उनके एक चित्र में राहगीरी-डे का नजारा दिखाई दे रहा है। महेश बताते हैं कि जब वे पहली बार अपने दोस्त के साथ राहगीरी-डे में पहुंचे, तो वहां के नजारे ने उन्हें आकर्षित किया। इसके बाद मैंने उस नजारे को अपने चित्र में दिखाने की कोशिश की। इसी में उन्होंने एक और चित्र को उकेरा है, जिसमें लेक सिटी की खूबसूरती को उकेरा है।

स्वराज भवन में आयोजित एकल चित्र प्रदर्शनी में पेंटिंग को निहारते कलाप्रेमी।

महेश ने इस चित्र को गोल्डन कलर दिया है और इसमें राजाभोज सहित मंदिर आदि को दिखाया है। महेश ने अपने चित्रों में समाज की जागरुकता के लिए बढ़ाए जाने वाले कदमों के प्रयास को दिखाया है। इनमें नारी शक्ति के बढ़ावा देने और उसको शिक्षित करना प्रमुख उद्देश्य है। प्रदर्शनी में एक चित्र खास है जिसे उन्होंने अधूरा छोड़ दिया है। उनका कहना है कि समाज में नकारात्मक सोच वाले लोगों के लिए यह चित्र अधूरा छोड़ा है। जो इसे चाहे रूप दें या अपनी सोच से समाज को गंदा न करें। 29 दिसंबर तक चलने वाली यह प्रदर्शनी दर्शकों के अवलोकन के लिए दोपहर 2 से रात 8 बजे तक खुली रहेगी।

दैनिक दबंग दुनिया
निष्पक्ष नजर, निष्पक्ष खबर

भोपाल, सोमवार, 28 दिसंबर 2015
www.dabangdunia.co

भोपाल/आसपास

30 चित्रों में दिया, समाज में जागरुकता का संदेश

दिखाया 5 साल का काम

महेश ने पिछले पांच सालों के कार्य को इस प्रदर्शनी में दिखाया है। उन्होंने अपने चित्रों में समाज की जागरुकता के लिए बढ़ाए जाने वाले कदमों के प्रयास को दिखाया है। इनमें नारी शक्ति के बढ़ावा देने और उसको शिक्षित करने का मेरा प्रमुख उद्देश्य है। 29 दिसंबर तक चलने वाली यह प्रदर्शनी दर्शकों के अवलोकन के लिए दोपहर 2 से रात 8 बजे तक खुली रहेगी।

दबंग रिपोर्टर • भोपाल

स्वराज भवन में रविवार को एकल चित्र प्रदर्शनी 'टू स्टेप्स' का शुभारंभ हुआ। इस तीन दिवसीय प्रदर्शनी में चित्रकार महेश पाल गावरा ने अपने 30 चित्रों को प्रदर्शित किया है। इन चित्रों में उन्होंने भिन्न विषयों के जरिए समाज को जागरूक होने संदेश दिया है। महेश ने एक चित्र में राहगीरी-डे को चित्रित किया है। वहीं लेक सिटी को गोल्डन कलर देकर राजधानी को गोल्डन सिटी को दर्शाया है। महेश ने प्रदर्शनी में एक खास चित्र को बनाया है, जो कि अधूरा है। इस चित्र में उन्होंने नारी को उकेरा है, जिन्हें समाज के ही एक गंदी सोच रखने वाले व्यक्ति ने मार दिया है, या उनके साथ गलत किया है। महेश ने चित्र के नीचे ब्रुश, कैंची, कलर आदि सामग्री रखी है। उनका कहना है कि समाज में गंदी सोच रखने वाले व्यक्ति यहां आकर फोटो पर अपना गुस्सा निकालें, लेकिन अपनी सोच से समाज में गंदगी न फैलाएं। उन्होंने अपने चित्रों में एक्रिलिक कलर का उपयोग किया है।

मनोरंजन

नवदुनिया
भोपाल, मंगलवार 29 दिसंबर 2015

सिटी लाइव

लक्ष्य विहीन दौड़ लगा रहे हम

स्वराज वीथि में तीन दिवसीय एक्जिबिशन '2 स्टेप्स अहेड'

भोपाल। स्वराज विथि में चल रही तीन दिवसीय पेंटिंग एक्जिबिशन में कला प्रेमियों को चित्रों में समाज के लिए ऐसा संदेश मिला, जिसमें दया, करुणा, प्रेम के साथ क्रोध भी समाहित था। चित्रकार महेश पाल गोबरा थीम बेस्ड पेंटिंग्स आकर्षण का केंद्र बनी हुई है। एक्जिबिशन में '2 स्टेप्स अहेड' शीर्षक से प्रदर्शित 06 पेंटिंग्स 'निर्भया' को समर्पित थीं। एब्सट्रेक्ट फार्म में समाज के उस पक्ष को उभारने का प्रयास किया है, जिसमें सिर्फ अंधकार ही अंधकार है। उनका कहना है, दुनिया एक दौड़ में जरूर शामिल हो गई है लेकिन कोई नहीं जानता उसे जाना कहां है। वहीं कुछ पेंटिंग्स में भोपाल की खूबसूरती दिखाई है, जिसमें राहगीरी इवेंट में हुई एक्टिविटीज और ट्रेक को दिखाया गया है। महेश ने कहा, यह चित्र बेटियों की सुरक्षा, शिक्षा और उत्थान को समर्पित हैं। प्रदर्शनी में उन्होंने 30 चित्र शामिल किए हैं, जो एक्रेलिक कलर्स से तैयार किए है। डार्क कलर्स का चुनाव उन्होंने खुशी, दुख और नकारात्मकता को दिखाने के लिए किया है। इसमें ब्लैक कलर मुख्य रूप से 'समाज के काले पक्ष' को दिखाता है। प्रदर्शनी 29 दिसंबर तक दोपहर 2 से रात 8 बजे तक कला प्रेमियों के अवलोकन के लिए खुली रहेगी।

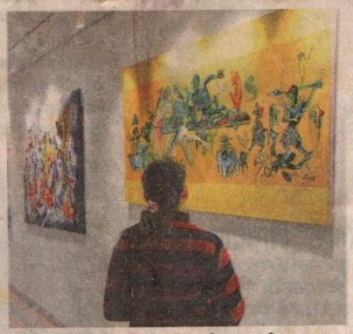

• एक्जिबिशन के दौरान पेंटिंग निहारती एक युवती।

सारांश

बहुत अच्छा लगता है, जब किसी काम को दिखाकर अपनी भावनात्मक एवं विषयात्मक रूपी कलाकर्म की बात करते हैं। और भी अच्छा लगता है, जब किसी स्पर्धा में अपने काम को भेजकर, उसे सराहा जाता और उसे पुरुस्कृत किया जाता है। इस प्रोजेक्ट के दौरान मैंने कई कलाकृति बनाई और अलग–अलग शहरों व देशों में प्रदर्शित किया, जिसे सराहा भी गया।

मैं बहुत खुश हूँ कि इन दो वर्षों में मैंने जो कुछ भी कार्य किया, वह मेरे जीवन के सुखद पलों में से होंगे, जो कि CCRT के माध्यम से मुझे प्राप्त हुए हैं। अपनी कलाकर्म की यात्रा में, मैं CCRT का नाम सबसे ऊपर रखूँगा, जिसके माध्यम से मुझे नई कलाकृतियों को गढ़ने और प्रयोग कर उनमें गहराई से उतरकर समाज में प्रदर्शित करने का मौका मिला।

आभार सहित धन्यवाद।